तृतीय अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

तृतीय अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

3.1 वैयक्तिक मूल्य

3.2 दाम्पत्यगत मूल्य

3.3 पारिवारिक मूल्य

3.4 परंपरागत मूल्य

3.5 नारी जीवन से संबद्ध नई मान्यताएं

तृतीय अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

साहित्य और मूल्य मनुष्य के सांस्कृतिक उन्नयन की उपज है। अतः साहित्य जिसे मानव जीवन का दर्पण भी माना जाता है तथा दृष्टा भी, में मूल्यों का चित्रण स्वभाविक है। हर लेखक अपने संस्कार, विवेक या अन्य प्रभावों से मूल्य ग्रहण करता है जिसकी चर्चा अपने साहित्य में करता है वही उस लेखक का मूल्य बोध होता है। व्यक्ति का समाज से अटूट संबंध रहा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि मनुष्य के जीवन का विकास समाज में रहकर ही हो सकता है। समाज में रहकर मनुष्य जिन शाश्वत मूल्यों को ग्रहण करता है, उन्हें सामाजिक मूल्य कहा जाता है। मानवीय मूल्य मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक मूल्यों की प्राप्ति में सहायता देते हैं। बिना समाज के मूल्यों की कल्पना करना असंभव है। सामाजिक मूल्य द्वारा ही व्यक्ति अपना जीवन परिपूर्ण ढंग से जी पाता है। यदि व्यक्ति को समाज से अलग कर दिया जाए तो उसमें मनुष्यत्व के गुण मुक्त हो जाएंगे और वह एकमात्र पशु ही माना जाने लगेगा। "सामाजिक मूल्य एक मानदंड होते हैं जो समाज के प्राणियों की इच्छाओं, संवेदनाओं, आवश्यकताओं व अभिरुचियों को प्रभावित करते हैं इसीलिए अनिवार्य रूप से ग्रहणीय है।"[1] सामाजिक मूल्यों की स्थिति व्यक्ति को नियमबद्ध व क्रमबद्ध बनाती है। इन मूल्यों के निर्माण में व्यक्तियों का सामूहिक सहयोग अति आवश्यक है। जिस कारण मूल्य मानवीय सामाजिक संरचना के साथ गहन रूप से संबंधित है। इसी प्रकार सुपरिचित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने भी आधुनिक समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में समाज से संबंधित मूल्य इस प्रकार हैं:-

3.1 वैयक्तिक मूल्य

वैयक्तिक मूल्य वह होता है जो किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा, संवेदना या अभिवृत्तियों से संबंधित हो। व्यक्ति के व्यक्तिगत निर्माण में वैयक्तिक मूल्य अति आवश्यक हैं। वैयक्तिक मूल्यों में व्यक्ति की निजी विचारधाराएं और सामाजिक हित भी शामिल रहता है और किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं रहता।

वैयक्तिक मूल्य व्यक्ति को मानवता का बोध कराते हैं। समाज की प्रत्येक क्रिया का पहला केंद्र व्यक्ति होता है। अपने दृष्टिकोण के अनुसार वस्तुओं को देखता-परखता है। अपने ही दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य मूल्यों के परिणाम को स्वीकारता है। इस प्रकार समाज में वैयक्तिक मूल्यों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों की भी रक्षा की जाती है। "स्व की पहचान ही मूल्यों की रक्षा है और मूल्यों की रक्षा ही वैयक्तिक सुख का माध्यम हो तो उन्हें वैयक्तिक मूल्य कहा जा सकता है क्योंकि व्यक्ति को जीवन मूल्यों की कसौटी पर कसा होने से ही सार्थक माना जा सकता है। बढ़ते हुए अन्याय और अत्याचार से वैयक्तिक मूल्य नष्ट नहीं हुआ करते।"[2] वैयक्तिक मूल्य मनुष्य के व्यक्तित्व को उद्धत बनाते हैं। उसे स्वत्व की पहचान कराते हैं तथा मानवता के प्रति उसके दायित्व को स्पष्ट करते हैं। वरना संयुक्त परिवारों से एकल परिवार, एकल परिवारों में भी अलगाव में वृद्धि, प्रेम विवाह, जीवन-शैली में मनमर्जी की प्रधानता सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति उदासीनता के कारण व्यक्ति स्वार्थी, एकाकी असंतुलित बनता जा रहा है। व्यक्तिगत मूल्यों को अपनाकर ही वह स्वस्थ मानव के रूप में अपनी अस्मिता स्थापित कर सकता है व्यक्ति यदि अपने 'अहम्' में अन्यों को समाविष्ट कर 'हम' का विचार करें, स्वार्थ एवं स्वैच्छा का त्याग करें तो वह अपने लिए संतोष और सुख प्राप्त कर सकता है और दूसरों को भी दे सकता है। इसके लिए आचरण के जो मानदंड अपनाता है वही वैयक्तिक मूल्य हैं जो व्यक्ति के तौर पर मनुष्य को ऊंचा उठाते हैं। उसका चारित्रिक उत्थान करते हैं तथा उसको समाज में भी आदणीय बनाते हैं। इसी से इनका महत्व समझा जा सकता है। जीवन में मूल्यों से ही व्यक्ति, मानव बनता है और मानव और दानव होने से बचता है। प्रस्तुत उपन्यास में 'बेतवा बहती रही' में वैयक्तिकता का कहीं भी अभाव नहीं है। उपन्यास के पात्र वैयक्तिक स्तर को महत्व देते हैं इसीलिए प्रत्येक पात्र के अपने कुछ वैयक्तिक मूल्य हैं। 'बेतवा बहती रही' शीर्षक उपन्यास में पात्रों के माध्यम से वैयक्तिक मूल्यों की चर्चा की है। उपन्यास का पात्र अजीत अपने पारिवारिक दायित्वों को पूर्णतः नकारते हुए केवल अपने भविष्य के बारे में सोचता है। इसी कारण अपनी विगत पीढ़ियों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता। उसे अपने ही वैयक्तिक मूल्य सर्वोपरि लगते हैं। जिसके कारण वह अपने माता-पिता से भी अपनी बहन की शादी में खर्च उठाने से इंकार कर देता है।

"तुम इत्ते दुखी काहे को हो गए मोहनसिंह। बस्स...? हिम्मत हार गए? अजीत मदद न करहै तो का सादी नहीं हुइये? तुम्हारी गिरस्ती अबै तक अजीत ने ही पाली है का? तुम अकेले ही लड़त रहे मोहनसिंह...गरीबी से, विपदा से, भगवान की मार से।"[3] विवेच्य उपन्यास में अजीत अपनी बहन की शादी में मां-बाप की मदद करने से इन्कार करता है बल्कि हर मां-बाप की वैयक्तिक इच्छा होती है कि उसकी संतान उसका सहारा बने लेकिन उपन्यास में अजीत अपने बारे में सोचता है न कि अपने कर्तव्यों के बारे में। अजीत के माता-पिता ने उसको पढ़ा-लिखा कर सरकारी नौकरी लगवाई है। अजीत की नौकरी के लिए उसकी मां ने अपने गहने तक बेच दिए, यह सब उसकी मां ने इसी आशा से किया था कि अजीत की नौकरी लगने के बाद उन्हें उर्वशी की शादी की कोई चिंता नहीं रहेगी क्योंकि यह सब जिम्मेदारियां अजीत स्वंय निभाएगा लेकिन हुआ सब इसके विपरीत। उपन्यास में लेखिका ने वैयक्तिक मूल्यों को पहल देते हुए पात्र का चरित्र-चित्रण किया है। वर्तमान समय में आज की पीढ़ी पुरानी पीढ़ियों से सामंजस्य बिठाने में असमर्थ देखी जा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त है। मूल्य जब अपने आदर्शों और मान-मर्यादाओं को त्याग कर दुखांत स्थिति में पहुंच जाते हैं तो मूल्य में विघटन पैदा हो जाता है। कई बार व्यक्ति के समक्ष ऐसी स्थिति आ जाती है कि वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को लेकर दुविधा में पड़ जाता है। उस स्थिति में वह नकारात्मक पक्ष को महत्व देने लगता है। सामाजिक मूल्य से अधिक वैयक्तिक मूल्यों को महत्व देना ही इसमें विघटन की स्थिति पैदा करता है। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने वैयक्तिक मूल्यों के विघटन का चित्र प्रस्तुत किया है। विवाह भी एक वैयक्तिक इच्छा है। जिसका विवेचन लेखिका ने वर्तमान समय को मध्य नज़र रखते हुए किया है। आज के समय में भी ऐसे विवाह संस्कार हो रहे हैं जिसे आज के समाज में मान्यता प्राप्त है। "कॉलेज की बूढ़ी प्रिंसिपल ने अपने नवयुवक प्रेमी से कोर्ट मैरिज कर ली थी...दुल्हन बुढ़िया, प्रेम की पुड़िया।"[4] इस उदाहरण से स्पष्ट है कि प्रिंसिपल ने भी व्यक्तिगत इच्छा की पूर्ति की है। लेखिका ने इस वाक्य से समाज में परिवर्तन की इच्छा व्यक्त की है। आज के समाज में व्यक्ति अपनी इच्छा को पूरा करके समाज में लोगों की सोच को बदलना चाहता है। इससे स्पष्ट होता है कि समाज दिन-प्रतिदिन बदल रहा है। यहां पर वैयक्तिक मूल्य प्रचार

का दृश्य देखने को मिलता है। प्रिंसिपल तथा युवक ने शादी करके वैयक्तिक मूल्य के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया है। लेखिका का उद्देश्य भी समाज में लोगों की सोच को बदलना है। वैयक्तिक मूल्यों में सर्वप्रथम 'स्व' की रक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में इसके विपरीत दृश्य देखने को मिलता है। "अथाह जल और भांय-भांय करता अंधेरा...मन में सौ आशंकाएं उड़ने लगी। उदय के लिए न जाने क्या-क्या सोच गयी-नाव उलट गयी तो...? भीषण लहरों का क्या भरोसा...? उदय डूब गए तो...? अपने जीवन का मोह तो रहा ही नहीं था। उदय को अपने साथ बिरधा ही खींच लाई...अपनी आपदा में।"[5] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि उर्वशी अपनी जान की परवाह नहीं करती बल्कि उसे अपने से ज्यादा अपने सौतेले बेटे उदय की चिंता सताती है। लेखिका ने इस उदाहरण के माध्यम से वर्तमान समाज में व्याप्त संबंधों की स्थिति को दर्शाया है जो अपनी निजता तथा व्यक्तित्व की खातिर एक-दूसरे को महत्वहीन नहीं समझते। इस तरह लेखिका ने वैयक्तिक मूल्य के प्रचार का चित्र प्रकट किया है।

'आत्मसंयम' भी एक महत्वपूर्ण वैयक्तिक मूल्य है। इसे धारण करने वाला व्यक्ति दूसरों का अहित न करने वाला, स्वार्थ नहीं, स्वहित साधने वाला होता है। 'इदन्नमम' शीर्षक उपन्यास में ऐसी ही एक पात्र कुसुमा का चरित्र उभरकर सामने आता है। कुसुमा को यशपाल ने बिना वजह त्याग कर दूसरी औरत रखी है। "अब छोड़ो भी, दिन और रात क्या? छाती पर सौत झेलना आसान नहीं। यह तो इस बिचारी का ही करेजा था बज्जुर का, सो सहती रही। रार न तकरार। ताने न उराहने।"[6] इस उदाहरण से वैयक्तिक मूल्य का विकास देखने को मिलता है। कुसुमा आत्मसंयमी स्त्री दिखाई गई है। जिसने अपनी इच्छाओं पर काबू रखा है। इसका आत्मसयंमी होना एक सामाजिक मूल्य है जो कि अपने घर को न त्याग कर अपने सौतन के साथ ही जीवन व्यतीत करने का फैसला करती है। स्वयं को वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेती है। कुसमा के माध्यम से वैयक्तिक मूल्य के अंतर्गत आत्मसयंम मूल्य को बढ़ावा दिया है।

इसी तरह 'आत्मसंयम' वैयक्तिक मूल्य का एक अन्य उदाहरण 'विज़न' शीर्षक उपन्यास में देखने को मिलता है। आत्मसंयम अपने पर काबू रखने की क्षमता

है। जिससे मानसिक, भौतिक आदि किसी भी प्रकार का लक्ष्य पाया जा सकता है। 'विज़न' उपन्यास में आत्मसंयम का रूप अपने सपनों की तिलांजलि देकर देखने को मिलता है। उपन्यास की नायिका का डॉ. नेहा अपनी वैयक्तिक इच्छा को मार देती है और परिवार के आदर्श को निभाती है। "ये ही सलाइड्स थी जो चंडीगढ़ कांफ्रेंस के लिए तैयार की थी लाख चाहा था, मगर जा नहीं पाई थी। अजय के पापा को देहली जाना था और बेटे को बाप के साथ अटेची की तरह...डॉ. नेहा घर की थी। सेंटर सूना छोड़ना या दूसरों के जिम्मे करना एक ही बात है, घर का कोई तो रहे।"[7] चंडीगढ़ कॉन्फ्रेंस में जाना नेहा की एक मूल इच्छा थी जो कि उसके न जाने पर चूर-चूर हो गई। नेहा के पास इस दुख को भूलाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं था। वह अपनी इच्छा को टूटते हुए ही रो पड़ी। लेकिन उसने स्वयं पर काबू रखा और परिवारिक कर्तव्यों को निभाया। इसी उपन्यास में डॉ.आर.पी. शरण अपनी व्यक्तिगत इच्छा को अपनी बहु डॉ. नेहा को बताता है। उसकी मूल इच्छा है कि वह अपने जीते जी अपना सारा कारोबार अर्थात आई सेंटर को अपने बहू-बेटे को सौंप दे। इसी उद्देश्य को सम्मुख रखते हुए उसने आंखों की सर्जरी करने वाली माहिर डॉ. लड़की से अपने बेटे का विवाह किया था। "संभालो। तुम्ही को संभालना है। तुम्ही को रख-रखाव के जरिए यह सारा कुछ बचाना है। मैं कितने दिन? तुम्हारे रहते सुख से विदा हो जाऊंगा इस दुनिया से।"[8] प्रत्येक मां-बाप की यही इच्छा होती है कि उनके बच्चे, उनके द्वारा चलाए गए व्यापार को या कोई पैतृक धंधा हो, उसे उनकी इच्छा के अनुसार संभाले तथा आगे बढ़ाएं। उपर्युक्त उदाहरण से भी यही स्पष्ट होता है कि डॉ.आर.पी. शरण अपनी वैयक्तिक इच्छाओं को पूरा करना चाहता है। इस प्रकार जहां उपन्यास में वैयक्तिक मूल्य विघटित होते नज़र आए हैं वहीं पर वैयक्तिक मूल्य के विकास का चित्रण भी हुआ है। विवेच्य उपन्यास की एक अन्य पात्र पेशे से डॉक्टर है। प्रत्येक डॉक्टर का व्यक्तिगत मूल्य अपने पेशे को ईमानदारी से आगे बढ़ाना होता है। उपन्यास की अन्य पात्र डॉ. आभा भी अपने वैयक्तिक मूल्य को सर्वप्रथम स्थान देती है। डॉ. आभा अपने परिवारिक दायित्वों को भूल कर पेशेंट्स को प्रमुख रखती है। "मैं अभी जाऊंगी। मुझे जाना होगा। मेरे पेशेंट्स।"[9] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि डॉक्टर अपने मरीजों के लिए अपने घर के काम को छोड़ देती है तथा अस्पताल जाने को तैयार हो जाती है।

इस प्रकार उदाहरण से वैयक्तिक मूल्य के विकास का चित्र अंकित हुआ है। इसके विपरीत वर्तमान युग में डॉक्टरी पेशा नहीं, धंधा हो गया है। जिसके कारण मरीजों के प्रति डॉक्टर दुर्लभ होते जा रहे हैं। किसी व्यक्ति के मानव होने की सबसे बड़ी पहचान है, दूसरों के प्रति अपने मन में संवेदनशीलता का होना। संवेदनशीलता भी एक वैयक्तिक मूल्य है। उपन्यास में डॉ. आभा अपने कर्तव्य को निभा कर संवेदनशीलता का परिचय देती है। 'विज़न' शीर्षक उपन्यास में मूल्य बोध के वैयक्तिक मूल्य का विघटन तथा मूल्य विकास के दोनों पक्षों का वर्णन मिलता है। कहीं पर वैयक्तिक मूल्य का विकास दिखाई देता है तो कहीं पर वैयक्तिक मूल्य का विघटन।

'स्वाभिमान' वैयक्तिक मूल्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। स्वाभिमान का अर्थ है अपने सम्मान की भावना होना। प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान को समाज में बनाए रखना चाहता है। "विनयशील और विनम्र होते हुए अपने देश और अपने प्रतिष्ठा और सम्मान की रक्षा के भाव को मन हृदय से ओझल न होने देना स्वाभिमान है। स्वाभिमान मनुष्य का सर्वोत्तम आभूषण है।"[10] इससे व्यक्ति की अस्मिता की रक्षा होती है। जिसमें स्वाभिमान नहीं होता, वह लाचार पशुतुल्य बन जाता है। अपमान से बचने के लिए स्वाभिमान की रक्षा की जाती है। इसके लिए रिश्तो की मर्यादाओं का विवेक सूझबूझ ज़रूरी है। ऐसा ही एक चित्रण 'चाक' शीर्षक उपन्यास' में देखने को मिलता है। उपन्यास के पात्र भंवर की मास्टर पद के लिए नियुक्ति ऐसी जगह अर्थात स्कूल में की जाती है जहां एक ही पद पर दो अध्यापक कार्यरत किए जाते हैं लेकिन भंवर ऐसी नियुक्ति को आदर्श नहीं मानता क्योंकि इससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचती नज़र आती है। "थूकता हूं मैं इस जलालत पर। साली नौकरी है कि आधबटाई? मातहतों की मातहती। अपने घर की खेती देखेंगे और इससे दस गुना कमाएंगे। पैंट पहनकर इगलास-हाथरस ही घूमने का मन करेगा तो अपने नाज पानी को बेचने और खली-बिनौले लेने चले आएंगे।"[11] उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि भंवर के स्वाभिमान को चोट पहुंचती है। जिससे वह इस नौकरी को नहीं करना चाहता। ऐसी नौकरी की तुलना अपनी खेती से करता है। वह नौकरी करने से अधिक महत्व अपनी खेती करने को देता है। इसी तरह उपन्यास के पात्र हुकुमा की शादी होती है। गांव का प्रधान बिना दहेज़ के शादी करवाता है। उसका मानना है

कि इससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ''हमारे दादा ने साफ कह दिया बेटी वाले से एक पइसा भी नहीं लेंगें। छोरी सोलह किलास पढी है, यह धन है हमारा। कोई सामान-फामान नहीं। प्रधान हैं हम, गांव के आदर्श।"[12] इस तरह गांव का प्रधान बिना पैसे लिए शादी करवा कर अपने आपको आदर्श घोषित करता है। उसकी वैयक्तिक इच्छा है कि जब बेटी इतनी पढ़ी लिखी है तो दहेज़ किस बात का? प्रधान गांव को आदर्श बनाने की इच्छा की पूर्ति को महत्व देता है। इस तरह लेखिका ने 'चाक' शीर्षक उपन्यास में वैयक्तिक मूल्य के विकास को बल मिला है।

'फ़रिश्ते निकले' शीर्षक उपन्यास की मुख्य नारी पात्र बेला पति की खुशी के लिए 'बांझ' शब्द का यापन करती दिखाई गई है। उसका पति शुगरसिंह अपने व्यक्तित्व के लिए अपनी नपुसंकता को बेला से छुपाता है। शुगर से अपने झूठे स्वाभिमान के लिए पत्नी को कसूरवार ठहराता है। वह अपनी नपुसंकता को स्वीकार इसी कारण नहीं कर पाता क्योंकि इससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचती नज़र आती है। ''शुगर से अपने व्यक्तित्व के लिए बेला को 'बांझ' शब्द दे देता है। अगर शुगरसिंह नपुसंक है तो पाहुने सरकारी सांड नहीं है।"[13] शुगरसिहं में बच्चा पैदा करने की क्षमता नहीं होती लेकिन वह इस सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता है। शुगरसिंह बेला को बात-बात पर बांझ होने का ताना देता रहता है। शुगरसिंह बेला को 'बाझं' कहकर उसकी वैयक्तिकता पर प्रहार करता है। जब शुगरसिंह के ऐसे शब्दों को बेला सुनती है तो उसके सारे अंग में वज्र प्रहार-सा अनुभव होता है। वर्तमान समय में भी ऐसी ही स्थिति समाज में देखने को मिलती है। पुरुष अपनी कमी को छिपाकर पत्नी पर हमेशा हावी रहना चाहता है। ऐसी ही स्थिति का चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है। बाद में बेला को स्वंय के बांझपन की सच्चाई का पता चल जाता है तथा वह इसका विरोध करती है। "मैं बाझं नहीं हूं। मुझे बच्चा चाहिए कि नहीं चाहिए लेकिन यह अपमान भरा शब्द मेरे वज़ुद पर मत चिपकाओं।"[14] इस तरह उदाहरण से स्पष्ट होता है कि समय के साथ-साथ बेला में भी जागृति आई है। लेखिका की जैसे-जैसे कथा के लिए कलम आगे बढ़ती गई उसकी नारी जागृत होती गई। बेला झूठ के साथ जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती है। बेला पुरुष समाज पर गहरा प्रहार करती है। बेला द्वारा कहे गए शब्द वैयक्तिक मूल्य के

विकास को बल देते हैं। भारतीय पुरुष स्त्रियों को दबाए रखना चाहता है। वर्तमान समय में इस स्थिति को धीरे-धीरे कम होते देखा गया है। लेखिका ने भी अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्रियों को अपने 'स्व' की रक्षा करने को प्रेरित किया है। जिसका स्पष्ट उदाहरण लेखिका ने बेला नामक स्त्री पात्र द्वारा स्पष्ट किया है। इसी उपन्यास में 'स्व' की रक्षा हेतु एक अन्य उदाहरण की भी चर्चा की गई है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा चाहता है। अपने वज़ुद या अस्तित्व के बल पर व्यक्ति तभी जी सकता है, जब तक किसी के दबाव के नीचे न हो। उपन्यास में एक ऐसा ही पात्र नज़र आता है जोकि अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपनी गाड़ी को बेच देता है। उसकी वैयक्तिक इच्छा है कि वह अपने बल पर समाज में जीवन व्यतीत करे। किसी के एहसान के नीचे दबकर जिंदगी व्यतीत नहीं करना चाहता है। "हां बेटा आज तेरा बापू हल्का हो गया। अपनी काया माया में निरा अपना। किसी का कर्ज उधार नहीं, जिसके नीचे दबकर अब तक गर्दन झुकाए रहता था।"[15] उजाला का पिता स्वाभिमानी पुरुष है जो कि स्वतंत्र रहना चाहता है। लेखिका ने यहां पात्र के माध्यम से एक महत्वपूर्ण संदेश भी दिया है कि व्यक्ति को अपने घर में किसी चीज़ की कमी में रह लेना चाहिए परंतु किसी के दबाव के नीचे नहीं जीना चाहिए।

'अल्माकबूतरी' शीर्षक उपन्यास में अपने वैयक्तिक सुख की प्राप्ति के लिए मां अपने बेटे को पैतृक धंधे में लगाना चाहती है। उपन्यास का मुख्य पात्र राणा इस धंधे को नहीं अपनाना चाहता है। राणा की नज़र में यह अमानवता है। राणा चिड़िया परेवाओं को नहीं मारना चाहता बल्कि पढ़-लिख कर एक नये समाज की स्थापना करना चाहता है। पढ़ना-लिखना ही राणा का स्वप्न है। राणा की मां उसे समझाते हुए कहती है "मेरी मति कील दी है सपूत ने। गुलेल तो मैं ही ले आई थी। मेरा राणा पखेरूओं के लिए बिलख रहा है, आदमी कैसे मारेगा, काटेगा।"[16] उदाहरण से स्पष्ट होता है कि राणा शिकार करने से घबराता है क्योंकि उसके हृदय में पक्षियों के प्रति प्रेम है, सहानुभूति है। यहां लेखिका ने वैयक्तिक मूल्य के विघटन को घोषित किया है क्योंकि इस तथ्य में व्यक्ति की इच्छा तो है लेकिन सामाजिक हित नहीं है। कथा के बढ़ते-बढ़ते कदमबाई राणा की इच्छा को समझती दिखाई गई है। वह राणा को पढ़ने की अनुमति दे देती है। वह राणा के मंसूबों को भांप लेती है। "राणा की मां इस बच्चे के पास कपड़े लत्ते नहीं हो तो

रहने दो। बस किताबें एक सुतली में बांध दो।"[17] कदमबाई राणा की इच्छा को पूरा करती चित्रित की गई है। इस तरह उपन्यास में जहां मूल्य विघटन दिखाई देता है वही वैयक्तिक मूल्य के विकास को भी दिखाया गया है। राणा की पढ़ने की इच्छा वैयक्तिक मूल्य को बढ़ावा देती है। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने कदमबाई में ममता, प्रेम, अहिंसा को दिखाया है जो कि व्यक्ति को मानव बनाता है। इन्हीं गुणों के होने से कदमबाई अपने निर्णय को बदल कर राणा के सपने को पूरा करने की सोचती है। कदमबाई अपनी विरासत में मिले संस्कारों को त्याग देती है क्योंकि उसमें हिंसा का रूप देखने को मिलता है जैसे रावण कुल में विभीषण का अवतार मानवता को बचाता है, उसी तरह राणा भी मानवता का प्रतीक है। वह आहिंसकता प्रमाण बनता देखा जा सकता है। कदमबाई को सामाजिक हित के लिए व्यक्तिगत हितों को त्यागते देखते हुए दिखाया गया है। अंततः कहा जा सकता है कि कदमबाई तथा राणा वैयक्तिक मूल्य के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया है। सामाजिक हित को ही वैयक्तिक सुख माना है।

'अगनपाखी' शीर्षक उपन्यास में लेखिका ने पात्रों के माध्यम से वैयक्तिक मूल्यों पर विचार विमर्श किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र चंदर केवल अपनी नौकरी के बारे में ही सोचता है। चंदर को अपने भविष्य की ही चिंता है। चंदर अपने परिवारिक कर्तव्यों को भूल बैठा है। उसे किसी से कोई लगाव नहीं रहा है। चंदर की मां की इच्छा है कि वह घर आए, कुछ समय वह अपने माता-पिता के साथ बिताए। इसके लिए वह चंदर को घर बुलाने के लिए चिट्ठी लिखती है लेकिन चंदर फिर भी घर आने को इंकार कर देता है। ‘‘फिर अम्मा ठीक ही कह रही थी कि चंदर अपनी नौकरी ही करता रहे, बस। हम लोग उसके क्या मतलब के? साल दो साल में तरक्की कर जाएगा कि कौन कहेगा कि चंदर हमारा बेटा है? हमारी अम्मा का नाती है। तेरे पिताजी भी उसके बाप होने के काबिल नहीं, किसी अफसर को ही अपना बाप मान ले।"[18] यह बाहरी दुनिया के आकर्षण के प्रभावाधीन अपने वैयक्तिक मूल्यों को अधिक महत्व देता है। जिसके कारण वह अपने आदर्शात्मक मूल्यों से दूर होता जा रहा है। विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने वैयक्तिक मूल्यों को प्रधानता देते हुए पात्र का चित्र प्रस्तुत किया है। इसी उपन्यास में भुवन की सास अपनी वैयक्तिक इच्छा के बारे में बताती है। वह अपनी आकाक्षां खोलते हुए बोलती है। "इसके ससुर की लाश मिल जाती तो

हम सती हो जाते। अकेली जनी का जीना भी कोई जीना नहीं, मरना कोई मरना नहीं। औरत की शोभा आदमी के बिना है ही नहीं। पर हमारे घर को 'बिना आदमी की जनी' का सराप लगा है।"[19] भुवन के ससुर की मृत्यु हो जाने के बाद सास उसी से अपने दुख सांझा करती है। उसकी सास का मानना है कि एक औरत की पहचान अपने पति से ही होती है। अगर उसका पति नहीं है तो औरत मर्द के बिना असहाय एवं अपरिचित महसूस करती है। उसका मानना है कि पति के बिना उसका कोई वजूद नहीं है। अस्तित्वहीनता नहीं, अस्तित्व शून्यता का दंश उसे दिन-रात सालता रहता था। उसे अपना भविष्य चूर-चूर होता नज़र आता है। उसे चारों ओर अंधकार नज़र आने लगता है। सती प्रथा एक सामाजिक कुरीति है लेकिन उपन्यास में पात्र इसका निर्वाह करना अपना वैयक्तिक मूल्य मानते हैं जो कि एक सामाजिक विरोधी नीति भी है। भुवन अपनी सास को समझाते हुए बोलती है। "अम्मा जी, किसी की शोभा किसी से नहीं होती। आदमी की शोभा खुद आदमी ही है और औरत की शोभा खुद औरत ही। यह सती वती का चक्कर क्या है।"[20] भुवन द्वारा कहे गए वाक्य वर्तमान समय की स्थिति को उजागर करते हैं। एक स्त्री की पहचान वह स्वयं है। आज के समय में स्थितियां बदलती जा रही हैं। आज की युवा पीढ़ी पति के नाम से नहीं बल्कि स्वयं के नाम से समाज में अपनी अस्मिता स्थापित करना चाहती है। इस तरह विवेच्य उपन्यास में व्यक्तिगत मूल्यों के विघटन का चित्र प्रस्तुत होता है क्योंकि इसमें सामाजिक हितों को प्रमुखता न देकर व्यक्तिगत इच्छा को रखा गया है जो कि समाज विरोधी नीति का परिचय देती है।

'गुनाह बेगुनाह' शीर्षक उपन्यास की मुख्य पात्र इला चौधरी की वैयक्तिक इच्छा है कि वह पुलिस की नौकरी करे। वह समाज सेवा करना चाहती है, वह स्वयं के लिए नहीं बल्कि लोगों की सुरक्षा हेतु पुलिस सेवा में आना चाहती है। उसका सपना है कि वह बूट वर्दी पहनकर थाने पर जाए लेकिन उसके परिवार वाले इस सब के विरोध में है। उसके परिवार वालों का मानना है कि लड़की दसवीं-बारहवीं कक्षा तक पढ़ें तथा उसके बाद लड़की की शादी करवा दी जाए। यही लड़की का मूल कर्तव्य है लेकिन इला चौधरी अपने दोस्तों से पुलिस में भर्ती होने की बात को सांझा करती रहती है। वह सब लोगों से अपने बारे में, पुलिस में जाने की सलाह मांगती है। "तू तो यह बता कि मैं स्पोर्ट्स में कैसी हूं?

अगर मैं पुलिस में ही जाना चाहूं तो ?"[21] इला स्कूल में खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेती है ताकि वह पुलिस में भर्ती हो जाए। इला अपनी शादी के मंडप को त्याग कर अपने सपने को पूरा करती है। इस तरह विवेच्य उपन्यास में महिला अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि सामाजिक हित को मुख्य रखकर पुलिस में भर्ती होना चाहती है। उपन्यास में अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के प्रति अत्यंत जागरूक है तथा इसे वह अपना कर्तव्य भी समझती है। इला थाने के हवलदार की गैर ज़िम्मेदारी तथा लापरवाही से दुखी होती है। इस तरह वह अपनी इच्छा को हवलदार के सम्मुख प्रस्तुत करती है। "मेरे बिना ही...लेडी कॉन्स्टेबल के बिना ही इस औरत की गिरफ्तारी...ड्यूटी के नाम पर इन निर्लज्ज पुलिसवालों ने मुझे छला है। मेरी भावनाओं को मटियामेट कर डाला।"[22] इला अपनी नौकरी को बड़ी ईमानदारी और नियमों के अनुसार निभाना चाहती है लेकिन वह पुलिस स्टेशन में पुरुष पुलिस कर्मचारियों की हरकतों को देखकर दुख अनुभव करती है। लेखिका ने वैयक्तिक मूल्य को अहमियत देते पात्र का चित्र प्रस्तुत किया है। यहां पर मूल्य अपने आदर्श और मान मर्यादाओं को छोड़कर दुखांत स्थिति में पहुंच जाते हैं तो यहां मूल्य में विघटन की स्थिति पैदा हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा होती है कि वह सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करे। मनुष्य सम्मान और स्वतंत्रता दोनों को पाना चाहता है। 'गुनाह बेगुनाह' शीर्षक उपन्यास में इला चौधरी की भी यही इच्छा है। वह अपने जीवन में सम्मान और समानता दोनों पहलुओं को आवश्यक मानती है। “लालसा अच्छे-अच्छे खाने की नहीं, रेशमी कपड़ों की नहीं, गहने जेवर की नहीं, मौज मस्ती की नहीं, साधन सुविधा की नहीं, प्रियतम पति की नहीं...बस वह थी अपने बूते सम्मानपूर्वक जीने की लालसा।"[23] इला चौधरी अपने अस्तित्व की रक्षा चाहती है। वह अपने होने का एहसास पाना चाहती है, जहां उसकी पहचान हो, उसका वजूद हो। वह अपने वैयक्तिक मूल्यों की खातिर ही बाहरी जगत से जुड़ती है लेकिन यहां भी उसकी वैयक्तिक इच्छाओं को कुचलते हुए दृश्य दिखाई देते हैं। जिससे उसे अपने सम्मान को ठेस लगती नज़र आती है। उपर्युक्त उदाहरण में वैयक्तिक मूल्य के प्रचार को चित्रित किया गया है। वर्तमान समय में भी ऐसी स्थिति है कि प्रत्येक महिला अपने अस्तित्व अर्थात पहचान को बनाए रखने के लिए घरेलू कार्य से बाहर निकलकर अनेक कार्यालयों में कार्यरत हो रही हैं। आज की महिला

पौराणिक युग की तरह घुट कर जीवन व्यतीत नहीं करना चाहती। स्वयं को अपने पति के अस्तित्व से नहीं बल्कि अपनी अलग पहचान बनाकर जिंदगी में आगे बढ़ना चाहती है। अपनी जिंदगी में आगे बढ़ने का फैसला करना चाहती है ताकि वह अपने व्यक्तित्व की रक्षा कर सके। लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से वर्तमान समय में व्याप्त महिलाओं की स्थिति को दर्शाया है जो अपनी निजता तथा वैयक्तिकता के खातिर सम्मानपूर्वक एवं स्वतंत्रता से जीवन जीना चाहती है। लेखिका ने वैयक्तिक मूल्य के प्रचार-प्रसार पर अधिक बल दिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपन्यास साहित्य के सभी पात्र एक-दूसरे से संबधित हैं किंतु कहीं न कहीं एक-दूसरे से पृथक भी हैं। सबका अपना-अपना जीवन और अपने-अपने वैयक्तिक मूल्य हैं। उन्हें अपने व्यक्तिगत मूल्यों में किसी अन्य का हस्तक्षेप पसंद नहीं है। सभी अपने वैयक्तिक मूल्यों को ही महत्व देते हैं। वह अपने वैयक्तिक मूल्यों को सर्वश्रेष्ठ मानकर कुछ मान-मर्यादाओं तथा आदर्शों को नज़रअंदाज कर देते हैं, जिनमें सामाजिक हित की उपेक्षा होती। इस तरह मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के दोनों रूपों को देखा जा सकता है।

3.2 दांपत्यगत मूल्य

भारतीय समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। स्त्री और पुरुष के बीच प्रगाढ़ प्रेम ही सफल दांपत्य संबंधों को विवेचित करता है। स्त्री प्राचीन काल से ही इस संस्कार के प्रति निष्ठावान रही है। पति की आज्ञा का पालन करना नारी अपना प्रथम कर्तव्य मानती है। भारतीय मनीषियों द्वारा बताए गए चार आश्रमों में से एक गृहस्थ आश्रम है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विवाह मानव जीवन का सार है। मनुष्य के अपने कुछ अधिकार, कर्तव्य और जिम्मेदारियां होती हैं जो गृहस्थ आश्रम के अनुसार दांपत्यगत मूल्य कही जाती हैं। पति-पत्नी एक-दूसरे के सच्चे जीवनसाथी कहे जाते हैं जो सामूहिक प्रयत्नों से पारिवारिक सुख की चेष्टा करते हैं। सफल वैवाहिक जीवन के लिए एक-दूसरे के प्रति त्याग, समर्पण भाव अति आवश्यक है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में दांपत्यगत मूल्यों के विभिन्न पक्ष दिखाई देते हैं। लेखिका ने कहीं तो गहन तम दांपत्यगत मूल्यों को दर्शाया है तो कहीं उन्हीं मूल्यों की अवहेलना दिखाई

है। सफल वैवाहिक जीवन के लिए प्रेम, सहनशीलता, विश्वास, त्याग आदि भावना की आशा की जाती है। इसके साथ ही एक-दूसरे से अपेक्षाएं रखते समय एक-दूसरे के गुण-दोषों को जानकर परस्पर संबंधित होना ज़रूरी है। यह एक ऐसा रिश्ता है जिसमें प्रतिबद्धता है। जिसे अधिकारों और कर्तव्यों के आदान-प्रदान से सफल बनाया जा सकता है। विवाह के तुरंत बाद पति-पत्नी जिस प्रकार का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति एकांत में तथा अन्य परिवारजनों के सामने करते हैं। उसी के अनुसार भविष्य में उनके रिश्ते बनते-बिगड़ते हैं। इस संबंध में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर 'सुहागरात दांपत्य का शिलान्यास' नामक निबंध में पति-पत्नी के संबंधों के बारे में लिखते हैं- "सब अनुभवों को अपने जीवन के विस्तृत तथा गहरे अनुभव में मिलाकर यही मैं कहना चाहता हूं कि सुहागरात और उसके बाद के चालीस दिन संपूर्ण दांपत्य जीवन की सफलता और असफलताओं का आधार है। सुहागरात जीवन की अदालत में प्यार का कानून है और उसके बाद के चालीस दिन इस कानून की व्याख्या करते हैं। सुहागरात में हम प्यार पाते हैं और बाद के सप्ताहों में उस प्यार की स्थायी प्रतिष्ठा का विधान बनाते हैं।"[24] सफल दांपत्य जीवन के लिए प्रेम, विश्वास, सहानुभूति आदि गुणों की आवश्यकता होती है न की द्वेष, ईर्ष्या आदि की। अगर दोनों अर्थात पति-पत्नी में विश्वास और समर्पण जैसे गुण हैं तो सुंदरता और कुरूपता पति-पत्नी के संबंधों में कटुता पैदा नहीं कर सकती है। कुछ ऐसी ही स्थिति 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में दिखाई गई है। "पांच साल बाद गौना हुआ। दुल्हन विदा हो आयी- मगर चने के पेड़ सी बौनी। सीधे हाथ में पांच की जगह छः उंगलियां। ऊपर से अमावसी रंग। ठीक आंधी रात के समय पत्नी को विशाल दहेजी पलंग पर गुदगुदे गद्दों पर असूर्यपश्या छोड़कर घर आंगन का मोह त्याग गए।"[25] उपन्यास का पात्र वैरागी अपनी पत्नी को इसीलिए त्याग देता है कि वह देखने में सुंदर नहीं है। उसका कद बहुत ही छोटा है और वह काले रंग की है। वह पत्नी का ही त्याग नहीं करता बल्कि घर को ही छोड़ देता है। माता-पिता सब अपने बेटे के आने की उम्मीद में बैठे हुए हैं, इसीलिए इस पात्र का नाम वैरागी पड़ जाता है। लेखिका ने वर्तमान समय को मध्य नज़र रखकर उपन्यास की रचना की है क्योंकि आजकल अधिकतर दांपत्य संबंधों में सुंदरता को लेकर पति-पत्नी का रिश्ता सफल नहीं हो रहा है। प्रेम, समर्पण की जगह सुंदरता ने ले ली है।

'झूलानट' शीर्षक उपन्यास में भी सुमेर अपनी पत्नी शीलो को उसके रंग-रूप के कारण शादी के तुरंत बाद त्याग देता है। वह शहर में जाकर दूसरी औरत रख लेता है तथा गांव में कभी-कभार आना ही ठीक समझता है। तुम्हारी छः उंगलियों वाली कल्लू बहू मेरे दोस्त की रोटी परोसने ही आ जाती तो वह कल के दिन मुझे बोलने न देता। काले गोरे दो रंग...पर तुम्हारी बहु तो नीली है, बैंगनी।"[26] इस तरह इस उपन्यास में भी सुमेर ने अपनी पत्नी को सुंदर न होने के कारण छोड़ दिया है। दोनों उदाहरणों से असफल अर्थात विघटित हो रहे दांपत्यगत मूल्यों का चित्रण किया गया है। इसी उपन्यास में सुमेर शहर में नौकरी करता है। उसका शीलो को न अपनाने का कारण उसके द्वारा शहर में ही दूसरी औरत को रखना है। गांव में मां तथा भाई को पता है लेकिन शीलो को इस बात की कोई खबर नहीं होती है। मां अपने छोटे बेटे अर्थात बालकिशन को सुमेर की दूसरी शादी की बात को किसी अन्य को न बताने के लिए कहती है। "तेरे भइया ने दूसरी जनी...अपने गिरस्ती बसा बैठा शहर में। बज्जुर पटक दिया, इस घर पर।"[27] सुमेर शादी के बंधन में बंध तो जाता है लेकिन उसे निभाता नहीं है। शहर में अपना घर बसा लेता है। लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से वर्तमान समय के दांपत्यगत संबंधों पर भी प्रकाश डाला है। आज भी ऐसे कई दांपत्य संबंध होते हैं जो शहर में कमाने के लिए आए होते हैं लेकिन यहां पर दूसरी पत्ननी रख लेते हैं। आज के संबंधों में विश्वास की कमी देखने को मिलती है। आजकल व्यक्ति किसी की भी सुंदरता पर रीझ जाता है। प्रेम और समर्पण का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं है। शीलो के सुंदर न होने से ही सुमेर ने शहर में दूसरी शादी कर ली है क्योंकि वह शीलो को अपने योग्य नहीं मानता। शीलो को जब सुमेर की शादी का पता चलता है तो वह स्वयं को असहाय पाती है लेकिन अपने ससुराल को त्याग कर मायके न जाने का फैसला करती है।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में एक अन्य उदाहरण सामने आया है जिसमें दांपत्य संबंधों के विघटन को चित्रित किया गया है। उर्वशी का तीन बच्चों के बाप के साथ विवाह कर दिया जाता है लेकिन कुछ दिनों के बाद ही बरजोर सिहं, उर्वशी को नापसंद करने लग जाता है। ''अकेले बैद की का बिसात होती? छोटी...बरजोर ने दिनारी दई उरवसी को। बहुत खटकने लगी थी अब।"[28] बरजोर सिंह ने उर्वशी से शादी अपनी जवानी निकालने के लिए की थी क्योंकि उर्वशी

बरजोर के बच्चों की उम्र की थी और उसी ने बरजोर के बेटे उदय की शादी अपनी इच्छा से करवाई थी। जिसके कारण बरजोर ने उर्वशी को धीमी गति से असर करने वाला जहर दिया था। विवेच्य उपन्यास में यह दांपत्यगत संबंध केवल पुरुष द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया गया था, क्योंकि इसमें प्रेम और विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं था।

'इदन्नमम' उपन्यास में पति-पत्नी के संबंध विच्छेद का दृश्य भी उजागर हुआ है। कुसुमा तथा यशपाल दोनों पति-पत्नी हैं लेकिन यशपाल ने कुसमा को विवाह होने के बाद स्वीकार ही नहीं किया। कुसुमा बहुत ही सुंदर नारी है लेकिन पता नहीं यशपाल के मन को क्यों नहीं भा पाई। "देवगढ़वारी कद काठी से लंबी, इकहरे बदन की बहू है। गेहुंआ रंगत है...फिर गोविंदसिंह के मोड़ा यशपाल के मन काहे नहीं भरी? काहे को त्यागा कुसुमा को।"[29] विवेच्य उपन्यास में लेखिका ने कुसुमा तथा यशपाल के संबंधों पर चर्चा की है। यशपाल ने कुसुमा को त्याग दिया है लेकिन कुसुमा अपने ससुराल में ही रहती है। यहां पर पारिवारिक रिश्ते तो अच्छे दिखाए गए हैं परंतु दांपत्यगत मूल्यों का पतन चित्रित किया गया है। कुसुमा घर में रहती है लेकिन उसका चरित्र संस्कार जन्य नहीं है। वह अपनी जेठ के साथ गैर संबंध बना लेती है। कुसुमा के पेट में उसके जेठ का बच्चा रह जाता है। "खैर मना कि बच्चा दाऊ जु का है। नहीं तो यह किसी का भी होता, जात का, आन जात का। गैल चलते आदमी का।"[30] इस प्रकार लेखिका ने समाज में पति-पत्नी में से किसी का भी अपने रिश्ते के प्रति अनदेखापन बर्दाश्त नहीं होता। कुसमा का भी चरित्र इसी तरह का है। यशपाल, कुसमा को अपनाता नहीं है, जिसके कारण कुसुमा अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपने जेठ के साथ ही संबंध बना लेती है। वर्तमान समय में भी ऐसे कई दांपत्यगत संबंध देखने को मिल रहे हैं। शारीरिक प्रताड़ना भी दांपत्यगत मूल्य के विघटन का प्रमुख कारण है। जिसके कारण आज पति-पत्नी का रिश्ता खतरे में पड़ गया है। इसी उपन्यास की एक महिला पात्र अहिल्या तथा पुरुष पात्र जगेसर में ऐसी ही स्थिति उजागर हुई है। "हाल तो आते नहीं, आते तो नशे में धुत मारपीट कर चले जाते।"[31] अहिल्या तथा जगेसर दोनों मज़दूरी करते हैं एक निम्नवर्ग परिवार से संबंध रखते हैं। बड़ी मेहनत से कमा कर दो वक्त का खाना भी बड़ी मुश्किल से जुटा पाते हैं लेकिन जगेसर जो कुछ मज़दूरी करके कमाता है उसे भी शराब

पीकर उड़ा देता है। इस पर दोनों पति-पत्नी में कहा सुनी हो जाती है। जब अहिल्या, जगेसर को समझाती हैं तो घर में कलह का वातावरण उत्पन्न हो जाता है। जिसके कारण अब तो जगेसर ने घर पर आना ही बंद कर दिया लेकिन जब भी आता है तो वह पत्नी अहिल्या को मारपीट कर चला जाता है। लेखिका ने टूटते दांपत्य रिश्तों को दिखाया है। वर्तमान समय में भी दांपत्य संबंधों में विच्छेद का यही एक मुख्य कारण शराब तथा मारपीट हो गई है। जिसके कारण दिन-प्रतिदिन पति-पत्नी के संबंध गिरावट की ओर जा रहे हैं। भीष्म साहनी द्वारा लिखित उपन्यास 'कड़ियां' में भी पति-पत्नी संबंधों के टूटने का दृश्य देखने को मिलता है। "मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, यह शादी भूल थी। मैंने फैसला कर लिया।"[32] इस उपन्यास में महेंद्र अपनी पत्नी प्रमिला को छोड़ने की बात करता है जिसका प्रमुख कारण है कि उसका ऑफिस में एक सुषमा नाम की लड़की से प्रेमपाश संबंध हो गया है। इस उपन्यास की चर्चा करना मैंने इसीलिए ज़रूरी समझा है क्योंकि लेखिका के उपन्यास साहित्य के कई पात्रों की जीवन कथा भी इसी उपन्यास के तथ्य से मिलती-जुलती दिखाई देती है।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में लेखिका ने दांपत्यगत मूल्यों के विभिन्न रूप दिखाएं हैं। सफल वैवाहिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए कुछ ऐसा करें, जिससे उनके दांपत्यगत संबंध अत्यधिक मधुर हो जाएं। कुछ ऐसी ही स्थिति लेखिका ने विवेच्य उपन्यास में स्पष्ट की है। उपन्यास का मुख्य पात्र रंजीत अपनी पत्नी सारंग के साथ उसके घर के कामों में हाथ बटांता है। "रहने दो, तुम मत खींचो नल। मैं भर लूंगा। नहीं मान रही ? रंजीत ने सारंग को बाहों में भर लिया।"[33] सारगं यह सब सुनकर मुस्कुरा देती है। उसे लगा जैसे सचमुच पति ने बहुत बड़ी बात कही है। सारंग को रंजीत द्वारा कहे गए शब्द सुखद एहसास कराते हैं। लेखिका ने उपन्यास में पति-पत्नी के मज़बूत रिश्ते को दिखाया है। उपन्यास में लेखिका ने दांपत्यगत मूल्य के विकास को बल दिया है। मूल्य विकास के साथ-साथ लेखिका ने उपन्यास में रंजीत तथा सारंग के रिश्तों में आ रहे बदलाव को भी दिखाया है। जिस तरह समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता, उसी तरह रिश्ते भी हमेशा एक जैसे नहीं रहते हैं। उनमें भी उतार-चढ़ाव की स्थिति देखने को मिलती है। "ले दिखाऊ मर्दानगी। देख मर्दानगी। तडातड़ थप्पड़ों की बारिश में घिर गई सारंग।"[34] इस दिन रंजीत, सारंग पर हाथ

उठा देता है। जिसका प्रमुख कारण रंजीत का सारंग के चरित्र पर संदेह हो जाना होता है। रंजीत को गांव में आए स्कूल मास्टर तथा सारंग के संबंधों पर संदेह हो जाता है। जिसकी वजह से रंजीत का गुस्सा एक दिन सारंग पर उतर जाता है। गांव का मास्टर श्रीधर, सारंग तथा रंजीत के घर में आता जाता है। उसी के कारण यह संदेह रंजीत के मन में पैदा होता है। वर्तमान समय में पति-पत्नी के संबंध विच्छेद का कारण एक-दूसरे पर शक करना ही देखने को मिलता है। जिसके कारण कई घर अर्थात परिवार टूट जाते हैं। "कल को यह मास्टर के संग स्कूल में ही रहने लगे, तब भी पूछोगे तुम कि इसमें बेलिहाजी की क्या बात ?"[35] रंजीत तथा सारंग के बीच हुए झगड़े के कारण को उसका पिता पूछता है तथा रंजीत उसे सारंग की सारी बात बताता है। पति-पत्नी के झगड़े को देखकर रंजीत का पिता भी उदास हो जाता है। उनके पूरे घर में शमशान जैसा माहौल बन जाता है। इस तरह लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से दिन-प्रतिदिन बदल रहे दांपत्य संबंधों को दिखाया है। जिसका प्रमुख कारण पति-पत्नी के अनैतिक संबंध या संदेह है। मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' भी दांपत्यगत मूल्य विघटन का एक उदाहरण है। जिसमें पति-पत्नी संबंध विच्छेद का जीवन व्यतीत करते हैं।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में लेखिका ने पति-पत्नी के टूटते संबंधों को चित्रित किया है। पुरुष का किसी अन्य स्त्री के प्रति आकर्षित होना दांपत्यगत मूल्य विघटन का कारण है। जिसके कई उदाहरण हम पीछे की गई चर्चा में पढ़ चुके हैं। विवेच्य उपन्यास में मंसाराम तथा कबूतरी कदमबाई के अनैतिक संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। "जोधा अब इस घर में तेरा बाप रहेगा या हम, काये से की घर की पटरानी बनने कदमबाई कबूतरी आ रही है।"[36] उपन्यास में कज्जा कबीले की नारी पात्र आनंदी को अपने पति मंसाराम तथा कदमबाई कबूतरी के अनैतिक संबंधों की भनक पड़ जाती है। जिसके कारण वह अंदर ही अंदर टूट जाती है। आनंदी रो पड़ती है तथा अपने बेटे जोधा से इस दुख के बारे में बताती है कि वह इस घर को अब छोड़ रही है क्योंकि तेरा बाप कदमबाई को वह हक दे रहा है जो असल में मुझे मिलने चाहिए। आनंदी ने अपने पति मंसाराम के साथ न रहने का फैसला कर लिया है। लेखिका ने भारतीय समाज की नारी में एक असीम शक्ति को भी वर्णित किया है। भारतीय पत्नी अंदर से चाहे अपने

पति से कितनी भी नाराज़ हो, क्रोधित हो लेकिन घर की बात को बाहर नहीं बोलती। ऐसी असीम शक्ति उपन्यास की नारी पात्र आनंदी में भी देखने को मिलती है। आनंदी मंसाराम के कारण घर छोड़ देना चाहती है लेकिन वह पड़ोस में लड़ते हुए औरतों को जवाब देती है। वह अपनी तथा मंसाराम के बीच की अनबन को बाहर नहीं उजागर करना चाहती। "हमारा आदमी हमें जो समझे। राजा की रानी एक, बांधी हजार।"[37] आनंदी का यह कथन गहन दांपत्य संबंधों को दर्शाता है। जिसमें कि गूढ़ प्रेम हो, विश्वास हो। आनंदी का ऐसा कथन सुनकर मंसाराम के दिल में आनंदी के प्रति प्रेम आता है। इस प्रकार जहां विवेच्य उपन्यास में दांपत्यमूल्य विघटन दिखाई देता है, वहीँ दूसरी ओर मूल्य विकास का दृश्य दिखाया गया है। वर्तमान समय में भी नारी सब दुख सहन कर सकती है लेकिन सौतन का आघात उसे पत्थर बना देता है। नारी का एक ऐसा रूप है कि वह हज़ार दुश्मनों से अकेले लड़ लेती है, अगर उसका दांपत्य संबंध सुखद होता है। पत्नी के लिए सबसे बड़ी बात यह होती है कि मुश्किल घड़ी में पति उसके साथ होना चाहिए। वर्तमान समय में नारी चाहे किसी भी पद पर क्यों न हो? वह अपने पति का सानिध्य चाहती है। आज भी पत्नी अपने पति को राजा के समान समाज में प्रतिष्ठा दिलवाती है लेकिन यह तभी संभव है अगर दोनों के संबंधों में मधुरता है। आज की पत्नी की इच्छा है कि उसका पति, उसके प्रति ईमानदार हो। उन दोनों के संबंधों में विश्वास, प्रेम बना रहे जो कि एक सफल दांपत्य जीवन के लिए आवश्यक पहलू माना जाता है।

'विज़न' उपन्यास में नवविवाहिता पति-पत्नी के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। यह पति-पत्नी पढें-लिखे परिवार से संबंध रखते हैं। यह दोनों पेशे से डॉक्टर हैं- डॉ. मुकुल और डॉ. आभा। यह दोनों हनीमून के लिए किसी हिलस्टेशन पर जाने की बात करते हैं। आभा का कोई इंटरव्यू होता है। वह मुकुल को फिर कभी जाने की बात बोलती है। डॉ. मुकुल भी उसकी बात से नाराज़ नहीं होते हैं। मुकुल कहते हैं "वी. आर हनीमून कपल फॉर एवर। ओ के ?"[38] डॉ. मुकुल, डॉ. आभा को कहते हैं कि हम हनीमून पर किसी भी समय चलेंगे क्योंकि हम सदा ही हनीमून पर जाने वाले जोड़े के रूप में रहेंगे। इस बात पर डॉ. आभा बहुत प्रसन्न होती है तथा दोनों के प्रेम पूर्वक संबंध नज़र आते हैं।" थैंक्स। थैंक्स मुकुल। यू आर सो लवली।"[39] आभा अपनी बात, डॉ. मुकुल द्वारा मनवाने पर खुश होकर पति को

प्यार से चूम लेती है। विवेच्य उपन्यास के उदाहरण में लेखिका ने पति-पत्नी के गूढ़ संबंधों को दर्शाया है। यही सफल दांपत्यगत रिश्ते की नींव होते हैं। जिसमें पति-पत्नी एक-दूसरे की बात पर सहमति जताते हैं। समय के साथ-साथ आभा की इच्छाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगती हैं। दोनों में झगड़े होने लगते हैं। दोनों के संबंधों में जो प्रेम था, सहमति थी, आज वह झगड़े का रूप ले लेती है। "आप ही समझा सकते हैं इसको। यह मेरे पेरेंट्स के खिलाफ ही नहीं, मेरे खिलाफ भी हो गई है। हर जगह तो मनचाही दुनिया नहीं मिलती।"[40] मुकुल, आभा के व्यवहार से अत्यधिक परेशान होकर, आभा के पिता से अपने संबंधों की शिकायत करता है। यहां पर दांपत्य संबंधों में खटास नज़र आती है। आभा अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करना चाहती है। इसी बात से डॉ. मुकुल नाराज़ है। डॉ. मुकुल यह सब बातें आभा के पापा को बताते हैं। विवेच्य उदाहरण से स्पष्ट है कि पति-पत्नी को सुखी जीवन बिताने के लिए एक-दूसरे की बात माननी चाहिए। प्रत्येक बात पर अपने ही जिद्द पूरी नहीं करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से एक पक्ष मजबूत होता जाएगा तथा दूसरा निर्बल महसूस करेगा। उपन्यास में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। आभा का व्यवहार दिन-प्रतिदिन मुकुल पर हावी बनता जा रहा है। डॉ. आभा, मुकुल को ही नहीं बल्कि उसके मां-बाप के साथ भी रहना पसंद नहीं करती। आभा अपने ही पक्ष को सही मानती है। उसे अपने जीवन में किसी का भी हस्तक्षेप पसंद नहीं चाहती। चाहे वह उसका पति डॉ. मुकुल ही क्यों न हो? यहां पर डॉ. आभा का कहना 'अहं' इतना बढ़ गया है कि वह पति से अलग होना चाहती है। उन दोनों के दिन-प्रतिदिन के झगड़ों ने अलग कर दिया। मुकुल भी कभी डॉ. आभा को लेने उसके घर नहीं गए। "मुकुल,आई वांट डाइवोर्स। आई वांट डाइवोर्स। आई वांट डाइवोर्स...मैं तलाक चाहती हूं।"[41] आभा ने मुकुल से अलग होने का फैसला कर लिया है। लेखिका ने यहां पर टूटते दांपत्य संबंधों को दिखाया है। दांपत्यगत मूल्य में बदलाव आने लगा है। आज की पीढ़ी किसी के दबाव में रहना नहीं चाहती बल्कि स्वतंत्र जीवन यापन करना चाहती है। इस तरह यहां पर दांपत्यगत मूल्य विघटन का चरित्र चित्रण किया गया है।

'कही ईसुरी फाग' शीर्षक उपन्यास में विवाह के बंधन कमज़ोर होते जा रहे हैं। उपन्यास की नारी पात्र रज्जो और पुरुष पात्र प्रताप पति-पत्नी होते हैं। प्रताप घर से बाहर विदेशी फौज में नौकरी करता है तथा

कभी-कभार घर आता है। रज्जो अपनी सास के साथ गांव में रहती है। रज्जो को गांव में आए एक फगवारे ईसुरी से प्रेम हो जाता है तथा ईसुरी नाम का फगवारा फागें भी रज्जो के लिए कहता है। ईसुरी की फागे रजऊ नाम से संबंधित होती हैं। रज्जो इसे अपने नाम से जोड़ते हुए फगवारे से प्रेम करने लग जाती है। "ईसुरी रज्जो को बुलाते हैं रात के समय। और रज्जो ईसुरी को अपने पास आने का रास्ता बताती है।"[42] रज्जो तथा ईसुरी में प्रेम संबंध लगातार चल रहा है। ईसुरी, रज्जो को मिलने के लिए रात के समय उसके पास आता है। पति प्रताप को रज्जो की ऐसी बातों का पता चलता है, जिससे उसके सामने व्यभिचारी दृश्य उपस्थित हो जाता है। रज्जो अपने पति की अनुपस्थिति में गैर मर्द के प्रति आकर्षित हो जाती है। अनैतिक संबंध दांपत्य संबंधों में दरार का काम करते हैं। पूरे घर में कलह का माहौल बन जाता है। इस अनैतिक संबंध के कारण रज्जो को प्रताप के द्वारा अपशब्द कहे जाते हैं। "कुतिया हम चले गए तो तेरे लिए हर दिन क्वार का दिन हो गया...। तमाम पाल लिए रंडी ने।"[43] प्रताप का गुस्सा रज्जो पर फूट पड़ता है। प्रताप राज्जो को गालियां देता है। इस प्रकार दोनों के रिश्ते में अविश्वास देखने को मिलता है। प्रताप तो घर की जिम्मेदारी उठाने के लिए नौकरी पर गया था परंतु रज्जो को घर की जिम्मेदारी न उठाते हुए, अनैतिक क्रियाओं में कार्यरत होते देखा जा सकता है। इस प्रकार लेखिका ने दांपत्य संबंधों में मूल्य ह्रास की स्थिति का अंकन किया है। उपन्यास में लेखिका ने आज की नारी की स्थिति को दर्शाया है कि वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अनैतिक संबंधों का मार्ग अपना लेती है। पौराणिक काल में एक सीता जैसी स्त्री का चरित्र भी सामने आता है। जिसने चौदह वर्ष तक पराए पुरुष के घर में बिताए लेकिन अपने सत्यवादी वचनों पर अडिग रही। किसी पराए पुरुष के प्रति अपने मन में आकर्षण पैदा नहीं किया। अब समय में बदलाव हुआ है वैसे ही पति-पत्नी के रिश्ते भी बदल रहे हैं।

'त्रियाहठ' उपन्यास में गूढ़ दांपत्य संबंधों का चित्र सामने आया है। उपन्यास के पात्र अजीत की पत्नी अपने सास-ससुर के साथ गांव में रहती है क्योंकि अजीत गांव से बाहर कहीं दूर सरकारी नौकरी में कार्यरत है। घर में सास-बहू की कहा सुनी हो जाती है। जिससे अजीत अपनी बहन उर्वशी से अपनी पत्नी का पक्ष रखता हुआ कहता है- "अब यह बता कि

तेरी भाभी को हम भी सताएं तो यह किसके दम पर यहां रहे ?"[44] इस कथन में अजीत अपनी बहन उर्वशी को बताता है कि अम्मा चाहती है कि हम विमला को मारे-पीटे लेकिन अजीत, विमला के साथ ऐसा दुर्व्यवहार नहीं करना चाहता है। उसका मानना है कि विमला अर्थात एक लड़की अपने परिवार को छोड़कर अपने पति के सहारे ही ससुराल में रहती है। अगर पति भी अपने मां-बाप के साथ मिलकर अपनी पत्नी को सताने लग जाए तो वह किसके सहारे ससुराल में रहेगी? उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में भी ऐसी स्थिति देखने को मिलती है। आज का पति अपने किसी घर वाले अर्थात वह उसकी मां हो या अन्य पारिवारिक सदस्य के कहने में आकर अपनी पत्नी को मारना-पीटना उचित नहीं समझता। अपने दांपत्य संबंधों में किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता। आज के पति-पत्नी का रिश्ता पुराने समय जैसा नहीं रहा। जिसमें कि अगर घरवाले चाहे तो बेटा, बहू को छोड़ सकता है और अगर उनका मन हो तो बहू को ससुराल में रख सकता है। आज एक पढ़ा-लिखा समाज बन गया है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत आवश्यकताओं का पूरा ज्ञान अर्थात जागृति है। ऐसी ही स्थिति उपन्यास में देखने को मिलती है। अजीत पढ़ा-लिखा नवयुवक है वह सरकारी नौकरी करता है। वह नौकरी कहीं और जगह करता है इसी कारण विमला को अपने सास-ससुर के साथ में रहना पड़ता है। अजीत और विमला की यह दूरियां उनके पारस्परिक प्रेम को कम नहीं करती दिखाई देती हैं। अजीत मां को कह देता है कि आपकी नज़रों में, मैं कपूत ही हूं। यह सब सह लूंगा लेकिन मैं अपनी बीवी को मार नहीं सकता। "हां बहू के मारे आते बड़ी जल्दी-जल्दी थे।"[45] अजीत अपनी नौकरी बेशक कहीं दूर गांव में करता था लेकिन अपनी पत्नी को मिलने जल्दी-जल्दी घर आ जाता था। इस तरह यहां पर लेखिका ने पति-पत्नी के संबंधों में प्रगाढ़ प्रेम की स्थिति को चित्रित किया है।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में पैसे के बल पर निभाये जा रहे पति-पत्नी संबंधों को लेकर चर्चा हुई है। उपन्यास की पात्र समीना एक पुलिस कर्मचारी है। जिसकी नौकरी सिर्फ पैसे के लिए करवाई जाती है। "अबकी बार आसिफ को बड़ी सी रकम भेज दूंगी। वैसे भी तीन महीने से तनख्वाह दी नहीं है, वे भन्ना रहे होंगे।"[46] समीना का पति आते महीने उससे पूरी तनख्वाह ले जाता लेकिन कुछ समय से

समीना आसिफ को पैसे नहीं दे पाई। जिसके कारण आसिफ समीना से खफा है। यहां पर लेखिका ने केवल पैसों के लिए निभाये जा रहे दांपत्य संबंधों को चित्रित किया है। लेखिका ने स्त्री की सहनशक्ति का वर्णन किया है। समीना अपने पति को नाराज़ न करके उसे पूरी तनख्वाह हर महीने भेज देती है। ऐसी ही एक पात्र अर्चना का जिक्र इसी उपन्यास में किया है। वह भी अपने पति को हर महीने पैसे देती है और खुद पैसे-पैसे को मोहताज रहती है। अगर वह हर महीने पति को तनख्वाह नहीं देती तो उसको परिवार तथा पति द्वारा पीटा जाता है। पति की एय्याशी में कोई कमी नहीं थी। वह शराब पीकर अर्चना को बहुत पीटता है। अर्चना उसके अत्याचारों से बहुत पीड़ित होती है और अंत में फैसला लेती है "मैं तलाक लूंगी, ज़रूर लूंगी।"[47] अर्चना अपने पति से अलग होने का निर्णय करती है। इतना पैसा देने के बाद भी उसे चैन से जीने नहीं दिया जाता। लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से यह बताया है कि सब्र की भी कोई हद होती है। अर्चना ने पूरी तनख्वाह तक अपने पति को दे दी लेकिन उसका मारना-पीटना दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। इसीलिए उपन्यास में संबंध विच्छेद की बात सामने आती है। लेखिका ने समाज में लालची मर्दों का वर्णन किया है जिन्हें सिर्फ पैसा दिखाई देता है न कि अपने दांपत्यगत संबंध। अर्चना को एक समझौते वाली जिंदगी भी जीनी पड़ती है लेकिन फिर भी उसका जीवन सुखद नहीं होता। अर्चना ने अपने जीवन मैं न्याय पाने के लिए पुलिस का रास्ता भी अपनाया। अर्चना तथा उसकी मां हर महीने पुलिस स्टेशन न्याय के लिए जाती थी। "बेटा मेरी अर्चना चली गई...विष देकर मारी है राच्छस ने।"[48] अंततः अर्चना को मौत के घाट उतार दिया जाता है। यह बात पुलिस कर्मचारी इला चौधरी को उसकी मां से पता चलती है कि उसके पति ने उसकी हत्या कर दी है। विवेच्य उपन्यास में नारी को एक वस्तु के रूप में प्रयोग करने का वर्णन मिलता है। उपन्यास की एक अन्य नारी पात्र शीतल जो कि अपने पति द्वारा ही शोषित करवाई जाती है। शीतल के पति अर्जुन की बहुत दोस्ती होती है, यह सब मिलकर घर में शराब पीते हैं। अर्जुन के दोस्तों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी थी और जब वह शराब के नशे में होता तो वह इतना बहक जाता कि अपनी पत्नी को ही भूल जाता। "लो इस औरत को...बच्चा न रह जाए बस, इससे जैसे चाहते हो...वैसे ?"[49] उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि शीतल का शारीरिक शोषण

हो रहा था। वह भी उसके पति द्वारा अपने दोस्तों से करवाया जाता था। अर्जुन ने एक दानव वृति से भी ऊपर काम किया है। पति-पत्नी का ऐसा संबंध है जिसके सानिध्य में पत्नी स्वयं को सुरक्षित महसूस करती है लेकिन लेखिका ने यहां पर इसके विपरीत स्थिति का चित्रण किया है। शीतल अपने पति द्वारा किए गए अत्याचारों को सहती-सहती एक दिन थक जाती है तथा अर्जुन पर मिट्टी का तेल डालकर जला देती है। इस तरह उपन्यास की एक अन्य पात्र गुलाब की कथा सामने आती है जिसे उसके पति द्वारा मार दिया जाता है। उपन्यास की एक अन्य पात्र सुरेंद्र कौर के टूटते संबंधों का चित्र सामने आया है। सुरेंद्र कौर पुलिस कर्मचारी होती है तथा उसका पति उसे नौकरी छोड़ने को कहता है। दोनों ने प्रेम विवाह करवाया होता है लेकिन सुरेंद्र कौर नौकरी नहीं छोड़ना चाहती। वह असमंजस की स्थिति से घिरी होती है। उसे समझ नहीं लगता कि वह कौन सा फैसला करें। "अब वही प्यार से प्यारा अमृतसिंह तलाक मांगता है।"[50] इस प्रकार जब सुरेंद्र कौर नौकरी छोड़ने से इंकार करती है तो उसका पति उससे तलाक मांगता है। पति द्वारा ऐसी बात करने पर सुरेंद्र कौर अंदर ही अंदर अमृत सिंह के निर्णय से टूट जाती है और खुद को निस्सहाय महसूस करती है। लेखिका ने यहां पर पति-पत्नी के समझौतावादी जीवन पर व्याख्या की है। उपन्यास में स्त्रियों की दशा का वर्णन किया है। नारी अपने मन में इतना समर्पण भाव रखती है लेकिन फिर भी अपने दांपत्य जीवन को सुखमय नहीं बना पाती। विवेच्य उपन्यास में एकतरफा रिश्ता दिखाया गया है जो कि अधिक समय तक टिक नहीं पाता। अंत में विघटन की तरफ मुड़ जाता है। उपन्यास में दांपत्यगत मूल्यों का ह्रास एवं पतन का वर्णन देखने को मिलता है।

'फ़रिश्ते निकले' शीर्षक उपन्यास में लेखिका ने बेला नामक स्त्री पात्र की कथा कही है। जिसमें बेला को बात-बात पर बच्चे के लिए ताने दिए जाते हैं। उपन्यास में बताया है कि औरत का मां न बन पाना भी श्राप बन गया है। जिसमें बच्चा न होने के कारण पति-पत्नी संबंधों में आई दरार का जिक्र किया गया है। बेला का अनमेल विवाह हुआ होता है। उसका पति उसकी उम्र से कहीं अधिक बड़ा होता है। "दूसरी ले आऊंगा, तब देखना अपनी दुर्गति...अरे मर्द के लिए औरतों की क्या कमी ?"[50] इस कथन से ऐसी स्थिति सामने आती है कि औरत को बार-बार

धमकाया अर्थात डराया जाता है। बेला के अहं को ठेस पहुंचाई जाती है। उपन्यास में बांझ औरत को समाज में तिरस्कृत किया जाता दिखाया गया है लेकिन उपन्यास में बेला शुगरसिंह का विरोध करते हुए भी दिखाई गई है। बेला शुगरसिंह को सुना देती है लेकिन उसके बोलने पर डराया धमकाया जाता है। "साली एक लफ्ज़ भी बोली तो मिट्टी का तेल डाल कर फूंक दूंगा।"[52] शुगरसिंह बेला को बहुत प्रताड़ित करता है और उसे मारने की चेतावनी भी देता है। इस तरह उपन्यास में दांपत्यगत मूल्यों के पतन का चित्रण दिखाया गया है। इस प्रकार अंत में कहा जा सकता है कि लेखिका ने कहीं पति-पत्नी के मजबूत रिश्ते का प्रमाण प्रस्तुत किया है। दिन-प्रतिदिन दांपत्य संबंधों में बदलाव नज़र आने लगा है। विवाह के परंपरागत बंधन कमज़ोर होते जा रहे हैं। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से पति-पत्नी के रिश्ते में जो तनाव व दूरियां आ रही हैं उनका विवेचन प्रस्तुत किया है। लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक समाज में जहां एक ओर पति-पत्नी के संबंधों में प्रेमभाव और आदर्श मूल्यों को प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर संबंधों में हवश और विघटन की स्थिति को भी दिखाया है। जैसे-जैसे समय बीतता गया मूल्यों में परिवर्तन होता गया। लेखिका के उपन्यासों में एक अलग बात यह देखने को मिलती है कि दांपत्य संबंधों में जहां गिरावट आई है वहां पर कहीं नारी जिम्मेदार है और कहीं पर पुरुष। ऐसा नहीं कह सकते कि कोई अकेला ही मूल्य विघटन के लिए जिम्मेदार है और विकास के लिए दोनों ही उत्तरदायी हैं। अतः लेखिका पात्रों के माध्यम से समाज में दांपत्य मूल्यों के बदलते रुख को पेश करती हैं।

3.3 पारिवारिक मूल्य

परिवार समाज की अटूट एवं आधारभूत ईकाई है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही परिवार का महत्व स्वीकारा गया है। अनादि काल में संयुक्त परिवार प्रथा का विशेष महत्व था। एक ही परिवार में तीन-तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थी। आधुनिक समय में संयुक्त परिवार का महत्व कम हो गया है। अर्थ केंद्रित दृष्टि और व्यस्त जीवन ने परिवार पर सबसे बड़ा प्रहार किया है। जिससे परिवार ने एक नया रूप धारण कर लिया है। अब परिवार में सिर्फ माता-पिता और उनके बच्चे ही होते हैं। परिवार में सदस्यों का आपसी संबंध एक विशेष

मूल्य को दर्शाता है। परिवार में रहकर ही व्यक्ति जीवन के महत्व को समझ पाता है। पारिवारिक मूल्य व्यक्ति को परिवार के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराता है। परिवार से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्ति परिवार द्वारा ही समाज में आता है इसीलिए परिवार और समाज का घनिष्ठ संबंध है। पारिवारिक मूल्यों में आपसी प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, त्याग, सम्मान आदि की भावना शामिल रहती है। मान-मर्यादाएं और आदर्श धारणाएं ही सफल पारिवारिक मूल्यों की श्रेणी में आते हैं जो सफल पारिवारिक जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में विभिन्न परिवारों की कथाओं तथा उनकी स्थितियों पर प्रकाश डाला है। 'बेतवा बहती रही' शीर्षक उपन्यास में लेखिका ने अजीत जोकि उर्वशी का भाई है और परिवार का अकेला बेटा है उसे पारिवारिक दायित्वों से मुख फेरते हुए दिखाया है। यह एक पारिवारिक मूल्य विघटन है। "वे हार गए-गरीबी से नहीं, ज़िन्दगी से नहीं, वे परास्त हुए थे अपने ही पुत्र के विश्वासघाती छल से।"[53] उपन्यास के पात्र मोहन सिंह अर्थात अजीत का पिता अपने ही पुत्र से हार गए हैं क्योंकि जिसे उन्होंने इस उम्मीद से पढ़ाया लिखवाया था कि बेटा बड़ा होकर घर की जिम्मेदारियों को संभालेगा ओर इसी उम्मीद से सरकारी नौकरी पर लगवाया था। वही अजीत आज बहन की शादी में पैसे देने से इंकार कर देता है। इतना ही नहीं वह अपनी बहन के लिए अच्छा रिश्ता तक ढूंढने से इंकार करता है। मोहन सिंह के पास जो गहने थे वह भी अजीत की पढ़ाई के लिए बेच दिए थे। वह पुत्र से परास्त हुआ दिखाया गया है। लेखिका ने दिखाया है कि पारिवारिक मूल्य विघटित हो रहे हैं। अजीत के आंतरिक ह्रदय में आपसी प्रेम की कमी देखने को मिलती है। इसके साथ ही उपन्यास में दो भाइयों के बीच ज़मीन-जायदाद विवाद भी दिखाई देता है। खेती के बंटवारे के कारण गजराज और बरजोर में आपसी अनबन है। बरजोर, गजराज का चचेरा भाई है। बरजोर जो कि एक लालची स्वभाव का व्यक्ति है। उसे केवल अपने ही हित दिखाई देते हैं। गजराज की मां उसे समझाती है कि बरजोर को अपनी मनमर्जी करने दो। इसे जो खेत चाहिए दे दो। जिसके कारण दोनों परिवारों की खेती बंट जाती है बर्तन तक बटं जाते हैं। दोनों परिवारों में एक-दूसरे से बातचीत तक नहीं रहती है। एक-दूसरे के घर में आना-जाना तक बंद हो जाता है। "कका-ताऊ के पुत्र अब भाई नहीं, बैरी हो गए। एक-दूसरे को परास्त करने की

होड़ में रात दिन एक कर रहे थे।"[54] ज़मीन का बंटवारा होने से दोनों परिवारों में दुश्मनी पैदा हो जाती है। लेखिका ने इस स्थिति को दर्शाया है कि ज़मीन के कारण दोनों परिवारों की आदर्श मर्यादाएं सब टूट जाती हैं। भाई-भाई एक-दूसरे की जान के दुश्मन बन जाते हैं। इस प्रकार लेखिका अपने उपन्यास में ज़मीनी विवाद के कारण पारिवारिक मूल्य विघटन की स्थिति का अंकन हुआ है। इसके साथ ही इसी परिवार की महिलाएं पारिवारिक मूल्य विकास पर बल देती हैं। गजराज और बरजोर की मां रिश्ते में देवरानी-जेठानी हैं। उन दोनों के मन में कोई द्वेष नहीं है परंतु बेटों के लड़ाई के कारण उनका एक-दूसरे से बात करना बंद हो जाता है। जिसे बरजोर की मां सहन नहीं कर पाती। "जिज्जी, द्वार से द्वार लागौ, है दूरी ही कितनी है? जा लड़का नहीं मानत तौ आप काहे रोकती? काहे सुनती कहनी-अनकहनी? हम तो सदा ही आपके हैं जिज्जी "[55] इस कथन में दोनों देवरानी-जेठानी के पारस्परिक प्रेम का चित्रण होता है। इसमें बरजोर की मां विघटित हो रहे परिवारिक मूल्य पर अपनी जेठानी से चिंता व्यक्त करती है। बरजोर अपनी मां की बात को भी नहीं सुनता है। बरजोर अपने बेटी की उम्र की लड़की के साथ शादी कर लेता है जिससे सारा घर उसके विरुद्ध हो जाता है। उपन्यास में एक-दूसरे के प्रति विरोध भावना पारिवारिक मूल्यों का पतन करती है। एक सफल परिवारिक जीवन जीने के लिए दूसरों के लिए त्याग करना पड़ता है जिसकी उपन्यास में कमी देखी गई है। उपन्यास में देवरानी-जेठानी का एक-दूसरे के प्रति प्रेम सफल पारिवारिक मूल्य का उदाहरण चित्रित करता है।

'इदन्नमम' उपन्यास में लेखिका ने पारिवारिक मूल्यों की रक्षा की स्थिति का अंकन किया है। मनुष्य की मानसिक विकृतियों की चर्चा भी उपन्यास में देखने को मिलती है। व्यक्ति के ऊपरी दिखावे पर लेखिका ने प्रहार किया है। सच्चे रिश्ते वही होते हैं जिसमें एक-दूसरे की इज़्ज़त आबरू पर ध्यान दिया जाता है। जिस रिश्ते में एक-दूसरे को अहमियत दी जाती है। पारिवारिक मूल्य में इस बात पर बल दिया जाता है कि व्यक्ति को रिश्ते के अनुसार एक-दूसरे से व्यवहार करना चाहिए। रिश्तों में मान मर्यादाओं को पहल देनी चाहिए। "कीरा परें तुम्हारे। मंदा, मामा कहके टेरती है, सो भी नहीं ख्याल किया फिर काहे को बहन, भानिज मानने का स्वांग भरते हो राच्छत ! कुकरमी ! अधरमी।"[56] उपन्यास का पात्र कैलाश पेशे से मास्टर है जो कि मन्दा को अपनी भांजी कहकर पुकारता है

लेकिन वह मामा और भांजी की मर्यादाओं को भूलकर, मंदा के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती करता है। यहां भी उपन्यास में पारिवारिक मूल्य विघटन का चित्र प्रस्तुत हुआ है। रिश्ते केवल खोखले रिवाज़ के सिवा सिर्फ नाम के रह गए हैं। उपन्यास में परिवारिक रिश्ते दिन-प्रतिदिन बदलते जा रहे हैं। घर में मकरंद अपने दादा-दादी के साथ गांव में रहता है। उसके मां-बाप शहर में रहते हैं। मकरंद का बाप गांव में इसीलिए नहीं रहता क्योंकि उसकी नौकरी शहर में है। इसीलिए मकरंद जन्म से लेकर अब तक गांव में अपने दादा-दादी के पास ही रहता था। गांव के ही स्कूल में पढ़ाई की। "बस इत्तेक हमारी तरफ से कह दो दादा से की दादा का अधिकार अपनी औलाद तक था। अब हमारी संतान पर है हमारा हक्क, टांग न अड़ावे।"[57] मकरंद की मां उसको अब अपने साथ शहर में ले जाने की बात कहती है। बहु का ऐसा फैसला सुनकर मकरंद के दादा-दादी अचंभित हो जाते हैं। उपन्यास के पात्र गोविंद सिंह भी अपने बड़े भाई अर्थात पंचम सिंह से जमीन का बंटवारा मांगते हैं। गोविंद सिंह बोलता है कि हमें अब आप से अलग कर दो। गोविंद सिंह के चरित्र में कई ऐसी बातें थी जिसके कारण दादा पंचम सिहं उसे पसंद नहीं करते थे और इसी के जवाब में दादा पंचमसिंह भी कह देते हैं कि "गोविंद सिंह, तुम्हें अपना भाई कहते हुए अब हमें भी हिजो लगती है।"[58] इस तरह उपन्यास में संयुक्त परिवार का प्रचलन समाप्त होता दिखाई देता है। भाई-भाई के रिश्तो में दिन-प्रतिदिन होड़ दिखाई देती है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति विरोध, साजिश और अविश्वास की भावना मूल्य परिवर्तन की स्थिति पैदा करती है। जिसके कारण आधुनिक युग में भी संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवार देखने को मिलते हैं।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में बदल रहे पारिवारिक संबंधों को दिखाया है। मां-बाप के साथ बच्चों के संबंधों में बिखराव की स्थिति को चित्रित किया गया है। पढ़े-लिखे बच्चे जब शहरों में रहने लगते हैं तो वह अपने मां-बाप को भूलते जाते हैं। माना कि मां-बाप ने उन्हें पढ़ने के लिए शहरों में भेजा था तथा वहीं पर रोज़गार प्राप्त करके वह अपने गांव में वापिस नहीं आना चाहते हैं और न ही अपने मां-बाप तथा खेती को संभालना चाहते हैं। ऐसा ही एक परिवार उपन्यास में देखने को मिलता है। "बेटे ने कहा कि हम भी भूले हुए हैं तुम्हें और खेत को मौत तक।"[59] नंबरदार बहुत बूढ़े हो गए हैं और उनकी इच्छा है कि बच्चे गांव

में आकर उन्हें तथा खेती को संभाले। नंबरदार की उम्र इतनी हो गई है कि उनका खेत तक चल कर जाना मुश्किल है। एक समय था जब वह पांच गांवों का ज़मीदार था। हज़ारों किसानों से लगान वसूल करता था। अगर कोई किसान लगान नहीं दे पाता था तो उसकी कुर्की नीलामी बोल देता था। आज उसकी शारीरिक कमज़ोरी आने पर तथा बच्चों के साथ छोड़ जाने पर आधी से ज्यादा, उसकी फसल लोग दिन दिहाड़े काट कर ले जाते हैं। इस सब का कारण उसके बच्चों का खेतों अर्थात गांव को अनदेखा करना है। नंबरदार पूरे गांव में राज करता था लेकिन अपने बेटों के आगे शून्य हो गया। यहां पर लेखिका ने समय-समय की बात की है। उपन्यास में बच्चों का अपने कर्तव्य से पीछे हटते दिखाया गया है। जिस पिता ने उन्हें शहर में रहने लायक बनाया, उन्हें इस लायक बनाया कि वह बुढ़ापे में उनका सहारा बने लेकिन उन्हीं के संस्कारों में खोट निकल गया। वर्तमान समय में भी बच्चे शहरों में बस कर, वापिस गांव नहीं आना चाहते हैं। आज पारिवारिक रिश्तों में बिखराब व तनाव की स्थिति देखने को मिलती है। इस तरह लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से वर्तमान स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। उपन्यास में सारंग मुख्य नारी पात्र है। चंदन, सारंग और रंजीत का इकलौता बेटा है। इन्होंने चंदन को उसके ताया के पास पढ़ने के लिए शहर भेजा था। रंजीत ने ज़बरदस्ती चंदन को भेजा था क्योंकि गांव में कोई रंजिश चल रही थी जिसके कारण उन्होंने चंदन को उसकी सुरक्षा के लिए शहर भेज दिया जाता है। सारंग इसके बिल्कुल विपरीत थी। "आज मेरा बेटा आ रहा है। आ रहा है मेरा चंदन। चलो मेरे संग। सब चलो।''[60] जब सारंग को चंदन के गांव आने की सूचना मिली तो उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहता। उदाहरण में मां का बेटे के प्रति प्रेम दिखाया है जो कि एक पारिवरिक मूल्य है। इसी उपन्यास में गुलकंदी एक स्त्री पात्र है जिसकी मां ही है तथा पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। लेकिन गुलकंदी की मां दूसरी शादी नहीं करती क्योंकि उसका मानना था कि पराया पुरुष उसकी कदर तो करता लेकिन गुलकंदी की नहीं। उसने गुलकंदी के भविष्य को सुंदर बनाने के लिए अपने भविष्य का बलिदान कर दिया। इस प्रकार उपन्यास में पारिवारिक मूल्यों पर बल देते देखा जा सकता है।

'झूलानट' शीर्षक उपन्यास में एक मां की अपने बेटे के लिए चिंता व्यक्त की गई है। बच्चा बड़ा ही क्यों न हो जाए? लेकिन मां अपने बच्चों को छोटा ही समझती है। बालकिशन भी जवान लड़का है। उसकी शादी तो नहीं हुई है लेकिन उसका भाई अपनी पत्नी का त्याग करके शहर में रहता है। बालू ही अपनी भाभी की देखभाल करता है। सास-बहू की लड़ाई होती है। सास शीलो को गालियां देती है, जिससे घर में कलह का वातावरण बन जाता है। बालकिशन बिना खाना खाए सो जाता है लेकिन बालू की मां, बालू को भूखे सोने नहीं देती। "बालू, ओ मोरे बेटा...अये दो घुटं दूध। मेरी तो सांस में सांस रहेगी, तब तक पोसूंगी अपने लाल को। लुगाई रंडी तो सौख मौज की सगी साथिन है।"[61] इस उदाहरण में मां-बेटे के बीच के संबंध को व्यक्त किया है। मां अपनी बहू के प्रति नहीं बल्कि बेटे के प्रति अधिक चिंतित दिखाई गई है। बालू की मां अपने बड़े बेटे को भी मिलने को तरसती है क्योंकि सुमेर ने शहर में ही घर बसा लिया है। सुमेर ने घर में आना-जाना बहुत कम कर दिया है इसके लिए भी मां हमेशा चिंतित रहती है। सुमेर ने शीलो को इसीलिए त्याग दिया कि वह देखने में सुंदर नहीं है। इसके लिए भी सास शीलो को ही जिम्मेदार ठहराती है। सास शीलो को गालियां देती है कि अगर तू न होती तो ऐसे मां-बेटे के बीच दूरियां न होती। तेरी वज़ह से ही मेरा बेटे का घर में आना-जाना कम हुआ है। शीलो भी सास को कभी कभार खरी-खोटी सुना देती है। "हमारा करम खोटा न होता तो मिलती रांड सास।"[62] बहू का एक दिन गुस्सा फूट पड़ता है। इस प्रकार दोनों द्वारा एक-दूसरे को गालियां दी जाती हैं। इस प्रकार उपन्यास में सास-बहू की जब लड़ाई होती है तो एक पारिवारिक मूल्य विघटन का चित्रण किया गया है। उपन्यास में मां, बेटे के प्रति तो चिंतित है लेकिन वही बहू-सास के रिश्ते में मिठास नहीं है। लेखिका ने आधुनिक समय की स्थिति को ही उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है। संयुक्त परिवारों की संख्या इन्ही कारणों से कम होती जा रही है। सास-बहू की कटुता और प्रत्येक दिन के क्लेश के कारण एकल परिवारों का जन्म हुआ है। शीलो का सम्पर्ण भाव उपन्यास में देखने को मिलता है। वह अपने पति के त्याग देने पर भी ससुराल में रहती है। शीलो की सास को इस बात का कतई मलाल नही है कि वह अपने पति के बिना कैसे घर में रहती है? बल्कि इसके लिए भी बहु को गालियां देती है। हर गलत हुए काम के लिए शीलो को ही जिम्मेदार मानती है। इस तरह शीलो

की सहनशीलता भी समय के साथ-साथ समाप्त होती जाती है तथा वह भी सास को अपशब्द बोलती है। इस तरह उपन्यास में समय के साथ बदलते परिवारिक मूल्यों पर प्रकाश डाला है। सास-बहू के बिगड़ते रिश्ते आज भी समाज में देखे जा सकते हैं।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में मां-बेटे के पारस्परिक प्रेम का चित्रण किया गया है। कदमबाई घर का काम करती है। सारा दिन काम करते कैसे बीत जाता पता भी नहीं चलता? लेकिन इतनी थकी होने के बावजूद भी उसे अपने बेटे राणा की बहुत चिंता रहती है। राणा स्कूल जाने लगा है, शाम को जब वह स्कूल से घर वापस आता है तो कदमबाई राणा के घुटनों को दबाती हैं और राणा मां के द्वारा पांव दबाने पर कहता है कि मां, मैं कोई थका हुआ नहीं हूं, पढ़ाई तो बहुत मज़े का काम है। यहां पर राणा अपनी चिंता न करके, मां की चिंता करता है। मां तुम दिन भर काम करती हो इसीलिए तुम थकी होगी। इस प्रकार उपन्यास में मां-बेटा एक-दूसरे की परवाह करते देखे जा सकते हैं। उपन्यास में भाई-बहन के रिश्ते को भी देखा जा सकता है। मंसाराम अपनी बहन के घर आता है लेकिन उसका जीजा उसे बहुत खरी-खोटी सुनाता है। बहन यह सब सुनकर विचलित हो जाती है। "भैया तुझे धीरज की सौगंध। भानेज का मरा मुंह देखे जो इस कसाई की देहरी पर चढ़े।"[62] बहन अपने भाई को सम्मान देना चाहती है इसलिए उसे अपने घर न आने को कहती है। इसमें भाई-बहन का टूटता रिश्ता नहीं बल्कि पारस्परिक सम्मान की भावना को ऊपर उठाया है। भाई की इज़्ज़त को बहन अपनी इज़्ज़त समझते हुए उसे अपने घर दोबारा न आने को कहती है। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने पारिवारिक मूल्यों की चिंता व्यक्त की है। उपन्यास में पारिवारिक मूल्य विकास का चित्रण देखा जा सकता है।

'अगनपाखी' उपन्यास में विघटित हो रहे पारिवारिक मूल्यों पर चर्चा हो रही है। उपन्यास के मुख्य नायक-नायिका भुवन और चंदन नाम के दो पात्र हैं। भुवन और चंदर रिश्ते में मासी-भांजा लगते हैं। मासी का संबंध मां के रूप में माना जाता है यह हमारी सांस्कृतिक मान्यता है। भुवन और चंदर भी उम्र में एक जैसे हैं। चंदन छुट्टियों में अपनी नानी के घर आता जाता है। चंदर और भुवन आपस में खेलते रहते हैं लेकिन उनका यह खेल कब शारीरिक संभोग में बदल जाता है,

इसकी उन दोनों को भी कोई खबर नहीं रहती। "मौसी के साथ संभोग की इच्छा जताने वाले युवकों की कथा कहानियां पढ़ी है मैंने। मैं नाते भूल गया कि जवानी में अंधा हो गया।"[64] भुवन और चंदर ने एक जघन्य अपराध किया था यह देखकर नानी ने फंदा लगाकर रीड की हड्डी तोड़ ली। इस प्रकार के जघन्य अपराध आज भी समाज में देखे जा रहे हैं। लोग रिश्तो की मान मर्यादाओं को भूलते जा रहे हैं। परिवारिक कर्तव्यों को भूल कर स्वयं की आत्मा को तृप्त करने में लगे हैं। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण में पारिवारिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिलता है।

'विज़न' उपन्यास में गिरते पारिवारिक मूल्यों को देखा जा सकता है। उपन्यास की एक अंधी महिला का चरित्र सामने आया है। इस बूढ़ी अम्मा को उसका बेटा अस्पताल में छोड़ गया है। बूढ़ी मां का बेटा उसे अस्पताल में इलाज के लिए लाया था और मां को लेंस के पैसे का इंतजाम करने के लिए घर आने को कह कर आया था लेकिन वह कोई पैसे का इंतजाम करने के लिए नहीं बल्कि मां को अस्पताल में जान बूझकर छोड़ गया था। वह ऐसा कपूत निकला कि कभी वापस नहीं आया। बूढ़ी अम्मा बेचारी अस्पताल की खैरात के सहारे रही। बूढ़ी अम्मा अस्पताल की चारदीवारी से सट कर बैठी रहती। अस्पताल में रोगियों के साथ जो लोग आते थे उन्हीं के सहारे उसका जीवन भी कट रहा था। लोग अपने खाने में से खाना दे जाते हैं और कपड़े में से कपड़ा दे देते। "अपने घर। उस बेटे से बहुत से हिसाब करने हैं, जो मुझे छोड़कर।"[65] अम्मा की आंखों का ऑपरेशन कर दिया जाता है। उसकी आंखों की रोशनी वापिस आ जाती है। उनकी आंखों की रोशनी आने से अम्मा के हाथ पांव में ताकत आ जाती है। अब अम्मा घर जाने का निर्णय करती है। डॉ. आकाश ने अम्मा का कंसेंट दिया था। आकाश के साथ अम्मा का कोई खून का संबंध नहीं था बल्कि उसका और अम्मा का नैतिक संबंध था। इस तरह उपन्यास में खून के रिश्ते से बड़ा है पारस्परिक प्रेम। यहां पर पारिवारिक मूल्य विघटन का चित्र देखने को मिलता है। डॉ. आभा तथा डॉ. मुकुल अपनी नौकरी की वजह से मां-बाप से अलग रहते हैं। बरेली में कभी कभार छुट्टियों में आते हैं। आभा बड़े अमीर बाप की बेटी होती है। आभा के पापा ने दहेज़ में बहुत सा पैसा दिया है। जिसके कारण डॉ. मुकुल के बाप ने बरेली में बड़ी सी दुकान खोल ली है। आभा बरेली जैसे छोटे शहर में नहीं रहना चाहती है।

इस बात का आस-पड़ोस में भी पता था क्योंकि छोटे शहरों में अकसर एक-दूसरे के घर की बातें पता चल ही जाती है। ऐसा ही कुछ आभा के पड़ोस में था। "बेटा-बहू डॉक्टर हैं अपना काम छोड़कर रोज़ हमारे पास बैठे रहे? आते जाते तो हैं, कितना आयें।"[66] मुकुल की मां बीमार है लेकिन वह अपने पड़ोस में लोगों को बेटा-बहू के न आने की वजह नहीं बताती है। वह अपने घर की मर्यादा को बनाए रखना चाहती है। लेखिका ने आधुनिक समाज में व्याप्त पारिवारिक रिश्तो को दिखाया है। जिनमें अहंम है। आभा अपने बाप की अमीरी की वजह से छोटे शहर में नहीं रहना चाहती लेकिन उसकी सास अपने घर की सच्चाई को किसी को नहीं बताती। आभा के अहंम के कारण पारिवारिक रिश्तो में बिखराव की स्थिति बनी हुई है।

'कही ईसूरी फाग' में सास-बहू एक-दूसरे का सहारा बनी हुई हैं। सुख-दुख दोनों एक साथ काट रही हैं। रज्जो अर्थात बहू का पति दूर प्रदेश में नौकरी करता है तथा कभी-कभी छुट्टी लेकर घर आता है। रज्जो अपने पति प्रताप के मिलने को तरसती हैं। रज्जो अपने मायके चली जाना चाहती है। वह सास को कहती है कि उसके भाई को खबर कर दो कि रज्जो को यहां से ले जाओ।" बेटा, तुम चली जाओगी तो हम जिंदा कैसे रहेंगे।"[67] सास के कथन से अपनापन-सा झलकता है। वह बहू के बिना अकेली नहीं रहना चाहती क्योंकि बेटे के विदेश चले जाने के बाद बहू उसका एकमात्र सहारा है। उसी के सहारे वे अपना जीवन व्यतीत करती है। मां-बाप का सहारा एकमात्र संतान होती है जो कि उपन्यास में देखने को मिलता है। रज्जो की सास भी अपनी बहू के साथ रहना चाहती है यहां पर यह एक परिवारिक मूल्य है। सास अपनी बहू के वियोग से भलीभांति परिचित है कि रज्जो प्रताप के लिए कितना तड़पती है। "रज्जो इत्ती दूबरी हो गई। अम्मा को बताएंगे तो वे कित्ती चिंता करेंगी।"[68] रज्जो के इस दुख के समय में उसका भाई उसे मिलने आता है। वह रज्जो को देखकर हैरान रह जाता है क्योंकि रज्जो बहुत ही कमज़ोर और निर्बल हो गई थी। भाई बहन के प्रति चिंता व्यक्त करता है। लेखिका ने उपन्यास में व्यापक परिवारिक मूल्य विकास को चित्रित किया है। सभी पात्र एक-दूसरे के प्रति चिंतित हैं क्योंकि उनमें आपसी प्रेम है।

'त्रियाहठ' शीर्षक उपन्यास में नायिका उर्वशी की जीवन गाथा वर्णित है। जिसमें उर्वशी के पति की आकस्मिक मृत्यु हो जाने से वह अपने मायके आ जाती है। उसका एक बेटा होता है जिसका नाम देवेश है। उर्वशी के भाई अजीत ने एक गहरी चाल चलकर उसका दोबारा अनमेल विवाह कर दिया। अजीत लालची स्वभाव का व्यक्ति था उसने उर्वशी की सहेली के बाप से दस बीघा ज़मीन लेकर उसी के साथ उर्वशी की शादी तय कर दी। बरजोर की पहली पत्नी मर चुकी होती है और उसके तीन बच्चे होते हैं। उर्वशी को अपना पहला बेटा देवेश ससुराल अर्थात सिरसा में ही छोड़ना पड़ता है। देवेश अपने ताया के पास रहता है। "वे पगार के आसरे डालकर खेती छीन लेंगे।"[69] देवेश के ताया-ताई उसे नौकरी दिलवाने की सोच रहे हैं क्योंकि वह नहीं चाहते कि उन्हें देवेश को खेती का हिस्सा देना पड़े इसीलिए वह देवेश को नौकरी दिलवा कर खेती से बेदखल करना चाहते हैं। इस तरह उपन्यास में एक भाई-बहन के मूल्य विघटित हुए हैं। जिस परिस्थिति में अजीत ने ऐसा सौदा किया बल्कि उस मुसीबत वाली घड़ी में भाई को बहन का भरपूर साथ देना चाहिए था। अजीत ने परिस्थितियों का फायदा उठाया। उपन्यास में प्रत्येक पात्र अपने लक्ष्य को साधता हुआ नज़र आया है। प्रेम, विश्वास, दया की कमी उपन्यास में देखने को मिलती है।

'गुनाह बेगुनाह' की रेशमी अपने ही घर में शोषित होती देखी गई है। रेशमी की मां कुछ दिनों के लिए मायके जाती है। रेशमी अपने घर में पापा के साथ रहती है। रेशमी ही अपने घर का सारा काम करती है, साथ में भारी वाले काम, उसके पिता कर देते हैं। एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि रेशमी डर गई। "पापा की विनती पर मेरी आंखें फट पड़ी। लेकिन जिस तेजी से उन्होंने मेरी कुर्ती फाड़ दी, सलवार का नाड़ा तोड़ दिया।"[70] उसके बाप ने रेशमी के शरीर के साथ भरपूर मनमानी की। वह अर्थात रेशमी ऑटो लेकर अकेली ही मामा के घर पहुंच जाती है। रेशमी के बाप ने उसे किसी के साथ कुछ न बताने की धमकी दी थी। रेशमी का मां को देखते ही सब्र का पुल टूट गया। रेशमी ने अपनी मां को सब बताया। स्वयं का मेडिकल करवाने की बात कही लेकिन रेशमी की मां ने उसे गालियां देकर चुप करवा दिया। उपन्यास में एक पिता ही बेटी के लिए राक्षस बन जाता है। उपन्यास की एक अन्य पात्र लक्ष्मी जो कि पुलिस कर्मचारी है। रात-दिन ड्यूटी करती है। खुद कमा कर सारे घर को खिलाती है। लक्ष्मी का पति कुछ नहीं

कमाता। सास-ससुर आते महीने सारी तनख्वाह लक्ष्मी से ले लेते हैं। ऐसे ही कई वर्ष बीत जाते हैं। लक्ष्मी अपनी इच्छा से एक रूपए तक खर्च नहीं कर पाती। यहां तक कि अपने बच्चे को भी कुछ नहीं ले सकती। अगर वह कुछ रुपए खर्च करने के लिए मांग लेती तभी उससे अनेक सवाल कियें जाते हैं। इतना सब करने के बावजूद भी लक्ष्मी को घर में बहुत ताने सुनने को मिलते थे। "मसलन रात की ड्यूटी किसके साथ...टूर और केस की तफ्तीश में कौन से आशिकों की जमात...।[71] लक्ष्मी को शक की निगाह से देखा जाता है। यह सब बातें ससुराल वाले सब मिलकर लक्ष्मी को सुनाते। लक्ष्मी अपनी शादी को बनाए रखने के लिए उनके मंसूबों को पूरा करती रहती है। वह एक समझौते वाली ज़िन्दगी जीती रहती है लेकिन फिर भी ससुराल वाले लक्ष्मी को चैन से जीने नहीं देते। उपन्यास की एक अन्य पात्र श्रद्धा और बेटे के गिरते परिवारिक मूल्य उपन्यास में देखने को मिलते हैं। श्रद्धा के पति की मृत्यु हो जाती है तथा उसका देवर श्रद्धा को अपना लेता है। श्रद्धा के पास बेटी होती है लेकिन उसका बेटा श्रद्धा के दूसरे पति तथा उसकी बेटी को नहीं अपनाता। वह उसे अपने पिता का रूप नहीं मानता है। एक दिन श्रद्धा का बेटा अर्थात सुनील कंचन का बलात्कार कर देता है जो कि रिश्ते में उसकी बहन होती है। यह सब देखकर श्रद्धा घबरा जाती है और सुनील की हत्या कर देती है। इस तरह उपन्यास में भाई-बहन तथा मां-बेटे के पारिवारिक मूल्यों के ह्रास को दिखाया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि बाप के संरक्षण में भी बेटी सुरक्षित नहीं रहती है। वह बाप नहीं दानव से भी बढ़कर हो गया। भाई-बहन के रिश्तें मिटते जा रहे हैं। पारिवारिक रिश्तो में आदर्शों एवं मान्यताओं का लुप्त होता दृश्य देखने को मिलता है। अर्थ की महत्ता के कारण पारिवारिक मूल्य विघटित हो रहे हैं क्योंकि प्रेम, विश्वास की जगह पैसे ने ले ली है। समाज में मानव की आवश्यकता पैसा पूरा करता दिखाया गया है।

'फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में वीर और उजाला एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। दोनों के घर वाले इस रिश्तें से नाराज़ हैं। वीर घर वालों के विरुद्ध जाकर भी उजाला से विवाह करना चाहता है। वीर के बाप ने बहुत समझाया धमकाया लेकिन वीर अपनी बात पर अडिग है। वीर किसी की बात सुनने को तैयार नहीं है। दूसरी तरफ उजाला का बाप भी बहुत दुखी है। उसका मानना है कि उसने अपनी बेटी

का नाम उजाला इसीलिए रखा था कि वह अपने प्रताप से जीवन में रोशनी भर देगी लेकिन हुआ इसके विपरीत। उपन्यास में पुत्र अपने कर्तव्य को स्वीकार नहीं करता। "मेरा अब इस घर में कोई नाता नहीं।"[72] इस तरह वीर अपने प्रेम के खातिर घरवालों से संबंध नहीं रखना चाहता है। वीर के पिता ने भी उसे अपनी ज़मीन से बेदखल करने की धमकी दी लेकिन वीर अपने प्यार के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार बैठा है। इस प्रकार उपन्यास में परिवारिक रिश्तों को दिखाया है जिसमें बेटा अपने कर्तव्य से पीछे हट रहा है। बच्चों को अपनी जिद्द पूरी करते देखा जा सकता है। उपन्यास में पारिवारिक मूल्यों का उल्लंघन दिखाई देता है। जिसमें बच्चों तथा मां-बाप के रिश्तो में विघटन की स्थिति पैदा होती है। वर्तमान समय में भी बच्चों को माता-पिता की इच्छाओं और ज़रूरतों की बिल्कुल परवाह नहीं है। बच्चे अपनी- अपनी आवश्यकताओं को पहल देते हैं। आज की पीढ़ी अपने प्रेम के आगे सभी रिश्तो का बलिदान देने पर उतारू हो गई है। परिवार की इज़्ज़त आबरू की उन्हें कोई चिंता नहीं है। इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों का वर्णन तो किया है साथ ही उनमें विघटन और परिवर्तन की स्थिति को भी उजागर किया है। पारिवारिक मूल्यों का तब तक ही महत्त्व होता है जब तक परिवार के सदस्य प्रेमभाव से रहते हैं। प्रेम भाव का समापन मूल्य विघटन की स्थिति उत्पन्न करता है। पारिवारिक संबंधों में आया बदलाव परिवार के अर्थ को ही बदल देता है।

3.4 परंपरागत मूल्य

मूल्य जीवन की आधारशिला है। मूल्य मनुष्य के सहअस्तिव से जुड़े होते हैं। मूल्य मनुष्य को संस्कारवान बनाते हैं। प्राचीन समय से जो रीति-संस्कार चले आ रहे हैं। भारतीय समाज में उन्हें परंपरागत मूल्यों के रूप में लिया गया है। परंपरागत मूल्य मनुष्य को समाज और संस्कृति से संबंधित रखते हैं। मूल्य संस्कृति का ही अंग है। यदि संस्कृति में परिवर्तन हुआ तो मूल्य भी परिवर्तन हो जाता है। मूल्य परिवर्तन से समाज भी परिवर्तित होता है। परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन मानवीय संबंधों में जिस प्रकार बड़ी तीव्रता से होने लगा है उसमें परिवार एक ऐसी इकाई है जहां नैतिकता के कई मूल्य खोखले साबित हुए हैं।

आधुनिक युग में शिक्षा और विकास के प्रसार के कारण युवा पीढ़ी परंपरागत मान्यताओं और रूढ़ मूल्यों के प्रति विद्रोही बन रही है। वह परंपरागत बन्धन स्वीकार नहीं करना चाहती। यही कारण है कि इन मूल्यों में व्यापक टकराहट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस कारण आधुनिक संवेदना का पलड़ा भारी हो रहा है और पारंपरिक जीवन मूल्य दबते चले जा रहे हैं। लेखिका उपन्यास साहित्य में भी परंपरागत मूल्यों का यही रूप प्रस्तुत करती है। जहां विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है जो स्त्री-पुरुष को एक सूत्र में पिरोता है लेकिन कहीं-कहीं पर इससे स्त्री-पुरुष की परंपरागत छवि टूट रही है। विवाह मात्र समझौता बनकर रह गया है। लेखिका ने जहां परंपरागत मूल्यों का नकारात्मक रूप दिखाया है वहीँ इसका सकारात्मक रूप भी पेश किया है। 'बेतवा बहती रही' शीर्षक उपन्यास में महिला पात्र गजरा पति द्वारा त्याग दी जाती है लेकिन वह मायके नहीं जाती। वह अपना जीवन ससुराल में ही व्यतीत करती है। पूरा दिन सास-ससुर की टहल चाकरी में लगी रहती है। गजरा अपनी विदाई के समय बाप द्वारा दी गई शिक्षा का भरपूर पालन करती दिखाई गई है। "बाप के द्वारे से पालकी उठी है गजरा, अर्थी ससुर की देहरी से उठै बिटिया। मताई बाप की लाज रखियो।"[73] भारतीय समाज में सदियों से यही परंपरा चली आ रही है कि शादी के बाद बेटी का घर उसका ससुराल माना जाता है। इस परंपरा का पालन गजरा करती है। एक बार बेटी विदा होकर ससुराल चली आती है वहीँ उसका सुख-दुख होता है। बेटी पराई अमानत हो जाती है। उर्वशी का एक अच्छे और अमीर खानदान में रिश्ता होने पर सब लोग परंपरा से हटकर बातें करते हैं। गांव में चर्चा हो रही है कि हमारे समाज में बेटियों को जन्म से कोसा जाता है कि कैसे भाग्य होंगे इसके? लेकिन उर्वशी तो ऐसी घर गई कि सब लोग हैरान हैं। लोगों का कहना है कि लड़का कौन-सा हीरो की थैली से जन्म लेकर पैदा होता है? इस तरह लेखिका ने एक लड़की को महत्व दिया है। उर्वशी को जेठ-जेठानी की सेवा करने की शिक्षा दी जाती है क्योंकि यह भारतीय समाज की परंपरा है। उर्वशी के सास-ससुर नहीं है इसीलिए उर्वशी को जेठानी की बात मानते रहने को बोला जाता है। जब लड़की ससुराल विदा हो जाती है तो सास-ससुर की सेवा करना ही उसका आदर्श माना जाता है। उपन्यास की अन्य नारी पात्र मीरा पढ़ना चाहती है। मीरा का पिता उसकी पढ़ाई के पक्ष में नहीं है।

मीरा की मां की मृत्यु उसके बचपन में हो जाती है इसीलिए मीरा को उसके नाना-नानी अपने घर ले आते हैं। "हओ का होत मोडियन को पढ़ा के। कौन सी नौकरी चाकरी कराने है। पराए घर जाने हैं, हो काम धंधा सीखे, गिरस्ती संभारे।"[74] मीरा को परंपरा के अनुसार रहने को बोला जाता है क्योंकि उनका मानना है कि लड़कियां बड़ी होकर शादी करके पराए घर चली जाती हैं। पढ़-लिख कर लड़कियां क्या करेंगी? इसीलिए लड़कियों को घर के काम सीखने चाहिए। मीरा पढ़ने के लिए अपने ननिहाल चली जाती है। मीरा का पिता उससे नाराज़ होता है क्योंकि उनके अनुसार यह एक परंपरा का उल्लंघन है। मीरा के भाई विजय की शादी में उर्वशी भी आती है। उर्वशी विधवा हो गई थी। उर्वशी घर का सारा काम देख रही थी लेकिन शगुन के कामों में स्वयं को निषेध समझ रही थी। इसीलिए वह शादी के कामों में कम ही शामिल हो रही थी। बारात वापस आती है तो मीरा, उर्वशी को साथ चलने को कहती है लेकिन उर्वशी नहीं जाती क्योंकि उसे पता है कि एक विधवा स्त्री को शगुन के कामों में परंपरा के अनुसार अपशकुन माना जाता है। “कैसी पगली है...मीरा नहीं जानती कि सुहाग भाग में उसके जाने पर निषेधाज्ञा है।"[75] उर्वशी परंपरा को जानती है इसीलिए उसी के दायरे में रहना चाहती है। लेखिका ने परंपरागत मूल्य विकास पर बल दिया है। उपन्यास के सभी पात्र अपनी-अपनी परंपरा के अनुसार जीवन निर्वाह करते हैं। शुभ-अशुभ की मान्यताएं भी इन्हें अपनी सांस्कृतिक परंपरा से मिली हैं। उपन्यास के पात्र अपनी मर्यादाओं तथा आदर्शों का पालन करके परंपरागत मूल्यों के विकास को जीवित रखते हैं।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में नारी पात्र रेशम के पति दलवीर की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है। जिससे सारे घर में शोक छा जाता है। रेशम मां बनने वाली होती है लेकिन रेशम अपने बल पर दलवीर की विधवा होकर जीवन व्यतीत करना चाहती है। समस्त घरवाले उसका परंपरागत रूप से बछिया करना चाहते हैं लेकिन रेशम अपने जेठ के साथ इस परंपरा को नहीं निभाना चाहती। "अब तू ऐसा कर कि डोरिया की बाहं थाम ले।...घर की बात घर में रहेगी।"[76] रेशम ऐसा करने को मना करती है क्योंकि वह बाप समान जेठ के साथ कैसे रहेगी? उपन्यास में परंपरा का निर्वाह करने की बात कही गई है। भारतीय समाज में परंपरा सदियों से चलती आई है। जिसे निभाना परम्परागत मूल्यों के अंतर्गत

आता है। सारंग, चाची को घर में आए दामाद की मालिश करने को बोलती है। सारंग का मानना है कि दामाद भगवान के समान होता है तथा उसकी सेवा करना पारम्परिक कर्तव्य है। इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से अतिथि को भगवान के रूप में दिखाया है। सारंग की गांव में बहुत प्रशंसा होती है कि वह बहुत ही होनहार बहू है। रंजीत भी सारंग को बहुत प्रेम करता है। रंजीत, सारंग को घर की मान मर्यादाएं तथा आदर्श बताता है कि यहां पर उसे किस तरह रहना है? "सारंग, घर की मान मर्यादा रखना। पर्दा मुझे खुद नहीं अच्छा लगता। बस दलवीर भैया और दादा की आड़ कर ली।"[77] लेखिका ने यहां बताया है कि मानव जीवन में परंपरा का कितना महत्व है। परंपरा के बिना व्यक्ति स्वयं को अधूरा मानता है। अजीत को घुंघट अच्छा नहीं लगता लेकिन फिर भी वह सारंग को अपनी परंपराओं को बताता है। उसके अनुसार परंपरा में रहकर ही मर्यादाओं पर ध्यान दिया जाता है। सारंग, रंजीत के संरक्षण में स्वयं को सुरक्षित मानती है। रंजीत को ही कर्ताधर्ता समझती है। रंजीत ही उसे प्रत्येक खतरे से बचाने वाला एक है। उपन्यास में लेखिका ने पात्रों के माध्यम से परंपरागत मूल्य विकास पर बल दिया है। परंपरागत मूल्यों का पालन करना ही मनुष्य को संस्कारवान बनाता है। उपन्यास में प्रत्येक पात्र परंपरागत मूल्यों की बात करता है। वर्तमान समय में भी मनुष्य को अपनी परंपरा को लेकर चलना ही पड़ता है। आज की पीढ़ी चाहे गांव में है या शहर में लेकिन कुछ लोग अपनी परंपरा के अनुसार ही जीना पसंद करते हैं। भले ही कुछ लोग अपनी परंपरा को भूल जाते हैं। कुछ लोग स्वयं जिस वातावरण में रहते हैं स्वयं को वैसे ही ढाल लेते हैं।

'झूलानट' उपन्यास में शीलो एक परित्यक्ता महिला पात्र है, जिसका पति उसके रूप रंग की वजह से उससे दूर हो जाता है। शीलो अपनी सास तथा देवर के साथ गांव में ही रहती है। शीलो के पति ने शहर में दूसरी शादी कर ली है। शीलो अपनी सास की सेवा करने के लिए ससुराल में ही रहती है। उसने मायके जाने से इन्कार कर दिया है। सास को चिंता है कि यह अपनी ज़िन्दगी किसके सहारे गुजारेगी इसीलिए सास शीलो को उसके देवर के साथ बछिया करने को कहती है। "बछिया" सास ने कहा। न। बछिया मछिया कुछ नहीं।"[78] शीलो की सास बछिया करना चाहती है ताकि शीलो तथा बालकिशन समाज की नज़रों में

संस्कारवान रहे। शीलो बछिया करने से इंकार कर देती है। इस तरह शीलो अपनी परंपरा को नहीं मानती। शीलो बिना बछिया के बालकिशन के साथ रहना चाहती है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में परंपरा से मिली मानसिकता का चित्रण हुआ है। उपन्यास में कबूतरा कबीले के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। उपन्यास में कबूतरा कबीले का पात्र मंदिर चला जाता है क्योंकि उसने मन्नत अनुसार व्रत रखा था। वह मंदिर में पूजा कर लेता है तथा घंटा बजा देता है। यह सब कज्जा कबीले के मंदिर में होता है। उनके मंदिर में कबूतरा कबीले के लोगों का आना वर्जित होता है। कज्जा लोग यह सब अपने पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार अपराध मानते हैं इसीलिए वह अपने सारे मंदिर को गंगाजल से धूलवाते हैं। चंदा डालकर पुजारी को गंगा स्नान के लिए भेजते हैं। कज्जा लोग अपनी परंपरा के अनुसार काम करते देखे जा सकते हैं। इस तरह उपन्यास में परंपरागत मूल्य वहन को देखा जा सकता है। उपन्यास में अल्मा और राणा की शादी कबूतरा कबीला अपनी परंपरा के अनुसार करते हैं। सभी औरतें अल्मा को सजाती है। अल्मा सभी औरतों के बीच में बैठी हुई है। "सोने की चूरी नहीं बेटा, सुहाग की चूरियां कांच की होती हैं।"[79] अल्मा को परंपरा के अनुसार गहने-कपड़े पहनाए जाते हैं। सभी औरतें अपने विरासत में मिले मूल्यों को सुरक्षित रखती हैं। लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से परंपरागत मूल्यों के विकास पर ज़ोर दिया है। प्रत्येक व्यक्ति परंपरा को जीवित रखने का संभव प्रयास करते देखा जा सकता है। सभी पात्र परंपरा से ही अपनी पहचान बनाए रखना चाहते है यही तो परंपरागत मूल्य है। जिससे कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता है। भारतीय समाज अपनी परंपरा के कारण ही सभी देशों से अलग पहचान बनाए हुए है।

'अगनपाखी' शीर्षक उपन्यास की नायिका भुवन बहुत ही निडर महिला पात्र बनकर सामने आई है। उसका कोई भी भाई नहीं है। यह दो बहने हैं। बड़ी बहन की शादी हो गई है। भुवन लड़कों के कपड़े पहन लेती है। उसकी आवाज़ ऊंची थी और चेहरे पर गर्व भरा भाव-सा रहता। उसकी मां पुरानी विचारधारा की थी। उसको भवन के ऐसे लक्षण अच्छे नहीं लगते थे। भुवन की बहन का बेटा, चंदर

छुट्टियों में घर आया था तो नानी बार-बार भुवन को चंदर का ध्यान रखने को कहती। "नादान मोडीं। अपने घर की अमानत तो बेटा होती है। बेटी और बेटी के पुत कैसे अपने हुए।"[80] नानी परंपरागत मूल्य के अनुसार भुवन को समझाती है कि बेटी तो पराई अमानत है और बेटी के पुत्र भी पराए ही हुए। अपने वे हुए जो हमारी वंश परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। नानी को भुवन की शादी की भी चिंता होती है। नानी चंदर को अपने पिता से भुवन के लिए अच्छा लड़का ढूंढने को कहती है। "अपने पिताजी से कहना बेटा कि भुवन के लिए कोई लड़का...इतने दिन से खोज रहे हैं, अभी कोई मिला नहीं।"[81] यहां परंपरागत मूल्य का एक उदाहरण देखने को मिलता है। जहां विवाह संस्कार को महत्वपूर्ण माना गया है। नानी को भुवन के विवाह की चिंता हर समय सताती रहती है। भुवन के साथ की लड़कियों के बच्चे भी हो गए हैं। लेखिका के उपन्यास से स्पष्ट होता है कि मानव जीवन में विवाह संस्कार अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विवाह के बिना व्यक्ति अधूरा माना गया है। यह तो एक परंपरागत मूल्य है जिससे कोई भी व्यक्ति दूर नहीं भाग सकता। भुवन की शादी एक पागल लड़के से कर दी जाती है। भुवन ससुराल में नहीं रहना चाहती तो नानी उसे समझाती है कि ससुराल में तुम्हारा भी ज़मीन का हिस्सा है। विवाह के बाद बेटी का अपना घर ससुराल ही होता है इसीलिए तुझे अब वहीँ रहना है, वही तेरा घर है। नानी भुवन को मायके में न रहने की शिक्षा देती है। नानी की इस बात का कुंवर के घर में विरोध किया जाता है क्योंकि उनके घर में दो चूल्हे नहीं जलेंगे। उनके घर में बाप-दादों के ज़माने से ऐसी कोई परंपरा नहीं है। जब नानी उस नाई को पूछती है कि तूने ऐसा रिश्ता भुवन के लिए क्यों करवाया? तो नाई भी परंपरा की बात करता है कि रिश्तो का आधार ही झूठ है। इस तरह उपन्यास में परंपरा से चली आये मूल्यों का वर्णन किया गया है, जिसमें झूठ को भी एक परंपरागत मूल्य माना गया है। बिना झूठ बोले कोई रिश्ता नहीं होता। यहां तक कि राजा, रानी की शादी भी झूठ बोलकर ही होती है। भुवन अपने ससुराल में कुवरों की बहू की तरह रहती है। जब मंदिर जाती है, तभी लोगों को दिखाई देती है। अन्यथा भुवन हवेली में ही रहती है।

'विज़न' उपन्यास में डॉ. नेहा की मां उसे शादी के बारे में बताती है। नेहा को मां के द्वारा की गई यह सब बातें अच्छी नहीं लगती। नेहा की शादी में कोई रुचि

नहीं है लेकिन मां चाहती है कि नेहा की जल्दी से जल्दी अच्छे घर में शादी हो जाए। मां बोलती है कि बेटी चाहे बड़े घर की हो लेकिन जब शादी हो जाती है तो वह छोटी हो जाती है। पति के मुकाबले में नीची गिनी जाती है। "पुराने लोग बड़े व्यवहारी होते थे, बेटी के लिए बड़ा घर और बेटे के लिए छोटा घर देखकर ब्याह शादी तय करते थे। औरतें दबेगीं नहीं तो निभेगी कैसे?"[82] मां ने यह सब बातें कहकर नेहा के घाव पर नमक छिड़क दिया है। नेहा की मां उसे परंपरागत बातें बताती रहती है। मां हमेशा नेहा को एक बेटी की तरह रहने की सीख देती रहती है। इसी तरह डॉ. आभा की मां उसे लड़कों से दूर रहने की बात बोलती है। आभा की सगाई उसके ससुराल के पास किसी होटल में होने जा रही थी लेकिन मां को इसमें आपत्ति थी क्योंकि उसका मानना था कि लड़की कुंवारी मंडप ससुराल में नहीं जाती।

आभा की शादी हो जाती है। आभा दिल्ली से बरेली की बहू बन जाती है। डॉ. मुकुल तथा डॉ. आभा नौकरी करने के लिए घर से दूर रहते थे। मां मुकुल को बताती है कि कुछ भी हो जाए परंतु अपने ससुराल में जाकर मत रहना। दामाद चाहे कितना भी होनहार हो, अगर वह ससुराल में रहने लग जाए तो उसकी कोई इज़्ज़त नहीं होती। मुकुल की मां मुकुल को बोलती है अगर तू वहां पर रहेगा तो एक गिलास पानी मांगने के लिए भी सौ बार सोचेगा। डॉ. आभा की ऐसी परंपरागत सोच बिल्कुल नहीं थी। वह विवाह के बाद भी उतना ही हक समझती थी जितना कि उसका शादी के पहले अपने मायके में हक था। आभा अपने मायके में रहना चाहती है क्योंकि वह उस बरेली जैसे छोटे शहर में नहीं रह सकती। आभा की मां उसे समझाती है कि शादी हो गई है और अब तुम्हारा वही घर है, चाहे वह घर छोटा है या बड़ा है। उनके साथ मिलकर रहो। यही तुम्हारे मां-बाप है। आभा अपने मां-बाप को बोलती है कि तुमने हमें फेंक दिया है। आभा के पापा समझाते हैं कि बेटा यह तो सदियों से परंपरा चली आई है कि शादी के बाद बेटी का नाता मायके से कम हो जाता है। ससुराल के सुख-दुख लड़की के समक्ष होते है। "विशाल अमेरिका चला गया, वहां बस भी जाए, तब भी हमारा श्राद्ध संस्कार वही करेगा। उसके कर्तव्यों को तेरी जिम्मेदारी से नहीं तोल सकते।"[83] आभा के माता-पिता उसे परंपरागत मूल्यों के बारे में बताते हैं और उसे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने को कहते हैं। परंपरा से चले आ रहे नियमों

को हम बदल नहीं सकते। लेखिका ने यहां स्पष्ट किया है कि आज की युवा पीढ़ी अपने तौर तरीके से जीना चाहती है। उन्हें परंपरा से कोई लेन-देन नहीं है। उपन्यास में पात्र अपनी परंपरा के अनुसार जीवनयापन करना चाहते हैं और अपने बच्चे को भी यही शिक्षा देते नज़र आए हैं। उपन्यास में लेखिका ने बदल रहे परंपरागत मूल्यों पर भी चर्चा की है।

'कही ईसुरी फाग' उपन्यास की नायिका को उसकी सास मर्यादा में रहने की सीख देती है। रज्जो का पति घर नहीं है। रज्जो अपनी सास के साथ गांव में रहती है। गांव में ईसुरी नाम का फगवारा रज्जो का नाम लेकर फागें गाता है। सास, रज्जो को गांव में रहने के तौर तरीके बताती है। गांव में रहना है तो फगवारा जो कुछ गाए गाने दो उसे। लेकिन तुम्हें गांव के रीति-रिवाजों के अनुसार ही रहना पड़ेगा। फगवारे का साथ तुम छोड़ दो, वह तो बहुत जगह गया होगा और ऐसी ही फागें गायी होगीं। वह तो मर्द है जो मर्जी करे। औरत को तो मर्यादा में ही रहना चाहिए। रज्जो यह सब बातें शांत होकर सुनती है। रज्जो का ससुराल में पति के बिना मन नहीं लगता। वह मायके चली जाना चाहती है। रज्जो की ऐसी खबर सुनकर उसका भाई मिलने आता है। रज्जो भाई को आते देख कर उससे गले लग कर रोना चाहती थी। "भाई रामदास के साथ चला गया। मर्दों में मर्द बैठते हैं की परंपरा में। वह चाह कर भी रोक न सकी।"[84] इस तरह उदाहरण में गांव की परंपरा से रज्जो मुंह नहीं मोड़ सकती क्योंकि वह भाई से भी नहीं मिल सकती। गांव की परंपरा को लेखिका ने उजागर किया है। रज्जो गांव की परंपरा को समझती है। उपन्यास में लेखिका ने परंपरागत मूल्यों का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। परंपरागत मूल्यों के विकास को बढ़ावा देने के लिए परंपरा के अनुसार जीवन व्यतीत करना पड़ता है, जैसे रज्जो चाह कर भी अपने भाई के गले नहीं लग सकी।

'त्रियाहठ' उपन्यास में बरजोर अपनी बेटी की उम्र की लड़की से शादी कर लेता है। वह लड़की उसकी बेटी की सहेली उर्वशी होती है। मीरा को जब इस बात का पता चलता है तो वह क्रोधित हो जाती है। मीरा अपनी दादी को बोलती है कि तुमने क्यों नहीं दूसरी शादी की थी क्योंकि ऐसा तुम्हारी परंपरा के खिलाफ था लेकिन पिताजी ने अपनी संस्कृति के खिलाफ जाकर शादी कर ली। लेखिका ने

टूटते परंपरागत मूल्यों पर व्याख्या की है। परंपरागत मूल्य ही पारिवारिक मूल्यों को मज़बूती प्रदान करते हैं। अगर इनमें ज़रा-सा भी तनाव आ जाए तो पारिवारिक मूल्यों की नींव हिल जाती है। परिवार के सदस्य संस्कारपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं तो परंपरागत मूल्य विकसित होते हैं। उदाहरण में लेखिका ने बताया है कि उपन्यास का पात्र बरजोर दूसरी शादी कर लेता है। जिससे उसका सारा परिवार यहां तक कि बच्चे भी उसके खिलाफ़ हो जाते हैं। यहां पर पारिवारिक मूल्य बिखरते हुए दिखाई देते हैं क्योंकि मीरा अपने बाप का चेहरा देखना पसंद नहीं करती।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में परंपरागत मूल्यों के बिखरते रूप को दिखाया गया है। उपन्यास की नायिका इला चौधरी की विवाह में कोई रुचि नहीं है लेकिन घरवालों ने उसकी शादी तय कर दी है। इला पुलिस में भर्ती होना चाहती थी। इला का यह सपना उसके पिता को बिल्कुल पसंद नहीं था। इला हरियाणा की रहने वाली थी, वहां पर परंपरा के अनुसार बेटी को अधिक पढ़ने और नौकरी करने की आज्ञा नहीं थी। अगर कोई भी लड़की ऐसा करती तो यह परंपरागत मूल्यों के खिलाफ माना जाता था। "वैसे भी वह शादी का मंडप त्याग कर भागी थी।"[85] इला ने अपने जीवन की अलग ही राह चुन ली। वह शादी का मंडप छोड़कर भाग निकली। इला के इस कदम पर सारा समाज व्यंग्य करता है। इला को बदचलन का खिताब भी दिया गया। इला के परिवार में शादी करने के लिए दादी-नानी को मिलाकर पांच गोतों का ख्याल रखा जाता था। उपन्यास में सुरेंद्र कौर तथा अमृत सिंह दोनों प्रेम विवाह करते हैं। घरवाले भी उनके खिलाफ़ होते हैं क्योंकि दोनों अलग-अलग जातियों के थे। इस तरह उपन्यास में टूटते-बिखरते परंपरागत मूल्यों पर विचार किया गया है। आज की पीढ़ी अपनी इच्छाओं के आगे किसी की नहीं सुनती। दिन-प्रतिदिन परंपरागत मूल्यों का पतन हो रहा है। आज की पीढ़ी अपना कैरियर बनाना चाहती है। उपन्यास में विवाह संस्कार को ज़रूरी माना गया है।

'फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में बेला की मां उसके घर आती है। बेला को मां का इस तरह अपने घर आना अच्छा नहीं लगता। बेला का मानना था कि जब लड़की की शादी हो जाती है तो उसके रिश्ते बदल जाते हैं। "तू काये आई यहां? कन्यादान

करके भी बेटी के घर...अपने टेक तक नहीं रखी।"[86] बेला की मां अपनी बेटी को देखने के लिए उसके ससुराल आ जाती है। मां का यहां आना बेला को परम्परा के खिलाफ़ लगता है। वह कहती है विवाह के बाद मां को अपनी बेटी के घर नहीं आना चाहिए लेकिन बेला की मां की सोच उसके बिल्कुल विपरीत है। जिसके कारण वह अपनी इच्छाओं को सम्मुख रखकर परंपरागत मूल्यों को अनदेखा करती देखी जा सकती है। यहां पर लेखिका ने समय के साथ पात्रों की सोच परिवर्तित होती दिखाई है। लेखिका ने वर्तमान युग की नारी को स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छुक दिखाया है। वह परंपरा से चलते आते नियमों को स्वीकार नहीं करना चाहती। इसी तरह का एक तथ्य विनोद रस्तोगी के नाटक 'नए हाथ' में देखने को मिलता है। इस नाटक की महिला पात्र पुराने रिवाज़ो में जकड़ कर जीवन व्यतीत नहीं करना चाहती है। वह इन सब नियमों का विरोध करती है। "भगवान ने स्वतंत्र पैदा किया है। फिर जानबूझकर जंजीरों में क्यों बधुं।"[87] यहां पर भी नारी पात्र पुराने परंपरागत नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करना चाहती हैं। इनका मानना है कि यह नियम तो व्यक्ति के द्वारा बनाए गए हैं भगवान ने तो उन्हें स्वतंत्र रूप में ही पैदा किया है। इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यास के पात्रों के माध्यम से बताया है कि नारी विवाह जैसे संस्कार को आवश्यक नहीं मानती। वे स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। भारतीय संस्कृति में विवाह के बिना व्यक्ति को अधूरा माना जाता है जिससे कि कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता।

3.5 नारी जीवन से संबद्ध नई मान्यताएं

इक्कीसवीं शताब्दी के आधुनिक युग में समाज का नज़रिया नारी के प्रति बदल चुका है। जहां नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, वहीं पर कठिन चुनौतियों को भी स्वीकार करने लगी है। "उसकी प्राचीन मान्यताएं और मूल्य बदल चुके हैं। यह वैयक्तिक स्तर पर अहस्तक्षेप्य ज़िन्दगी जीना चाहती है।"[88] आधुनिक नारी के आर्थिक रुप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्यों में भी बदलाव आया है। वह समाज में स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में है। आधुनिक नारी के दृष्टिकोण में परिवर्तन के कारण स्थितियों और परिस्थितियों में भी परिवर्तन आया है। ऐसी दशा में मूल्यों में परिवर्तन होना स्वभाविक है।

लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में व्याप्त इन्हीं स्थितियों को दर्शाया है।

'इदन्नमम' शीर्षक उपन्यास में प्रैम नामक स्त्री पात्र के पति की मृत्यु हो जाती है। प्रैम अपने ससुराल में बेटी मंदा तथा सास के साथ रहती है लेकिन जवानी में विधवा होने पर उसका मन चलायमान हो जाता है। वह रतन नामक पुरुष पात्र के प्रेम में मग्न हो जाती है। "बऊ तेरी कौल, प्रैम भौजी चमेली खसिया से गोलियां मंगाती थी कि पेट में बच्चा न रह जाए।"[89] प्रैम के रतन सिंह से अनैतिक संबंध बन जाते हैं। वह लोगों के डर से गोलियां खाती है ताकि गर्भ में बच्चा न रह जाए। बऊ को इस बात का पता चलने पर बहुत दुख होता है तथा वह स्वयं के विधवा होने की बात कहती है। मैंने विधवा होने पर भी अपने बेटे और घर का भरण-पोषण किया और इस औरत ने अपने जीवन से संबंधित नई मान्यताएं स्वयं ही स्थापित कर ली हैं। बऊ प्रैम को चरित्रहीन घोषित करती है। उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि आज की नारी सतीत्व पर विश्वास नहीं करती बल्कि अपने जीवन को आनंदमग्न बनाना चाहती है। नारी अपनी इच्छाओं के आगे समाज की दृष्टि से अनैतिक काम करती है। उसे अपने आसपास दीन-दुनिया की कोई खबर नहीं है। प्रैम का मृत पति सारी ज़मीन जायदाद को उसके नाम कर गया है। प्रैम आर्थिक रूप से भी मज़बूत है। वह स्वयं को सभी बोझों तथा जिम्मेदारियों से मुक्त अनुभव करती है। लेखिका ने नारी के स्वतंत्र मन का वर्णन किया है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तो है साथ में नाजुक परिस्थितियों में अपनी शारीरिक ज़रूरतों को पूरा भी करती है। वर्तमान युग में भी नारी की ऐसी स्थिति देखने को मिलती है। नारी अपने पति की मृत्यु से दुखी न होकर ऐसे आराम की ज़िन्दगी बिताती देखी जा सकती है। आज वह समय नहीं रहा जब स्त्री विधवा होने पर स्वयं को भी समाप्त कर लेती थी। नारी ने अपने जीवन में ऐसी नई मान्यताएं बना ली है कि जिससे समाज भी संघर्ष कर रहा है तथा सामाजिक संबंधों में परस्पर टकराव पैदा होता है।

'चाक' शीर्षक उपन्यास में नारी से संबंधित नए विचार देखने को मिलते हैं। उपन्यास की पात्र रेशम के पति का आकस्मिक निधन हो जाता है। रेशम गर्भ

से होती है। वह आजीवन विधवा का जीवन व्यतीत करने का फैसला लेती है। परिवार में उसका इस बात के लिए काफी विरोध किया जाता है। "डोरिया जैसे देखे हैं तीन सौ साठ। उंगली छू कर तो देखें, भड़ुआ को कच्चा चबा जाऊंगी।"[90] रेशम का एक अविवाहित जेठ है जो एक पहलवान है। वह रेशम पर बुरी नज़र रखता है। उसके ससुराल वाले डोरिया के साथ रेशम का दूसरा विवाह करना चाहते हैं लेकिन रेशम घरवालों की इस बात को नहीं मानती। वे डोरिया जैसे व्यक्ति को अकेले ही निपट लेना चाहती है। रेशम को डोरिया की पहलवानी से कोई डर नहीं लगता बल्कि वह ऐसे मर्द की उंगली भी स्पर्श नहीं करना चाहती। इस प्रकार लेखिका ने आज की नारी की निडरता का वर्णन किया है। रेशम का मानना है कि जिस इंसान के प्रति उसके हृदय में इज़्ज़त ही नहीं है तो उसके साथ वह जिंदगी कैसे बिता सकती है? इस तरह उपन्यास में नारी अपने जीवन का सफ़र स्वयं तय करती हुई देखी जा सकती है। रेशम के आत्मविश्वास को उपन्यास में दिखाया गया है। उपन्यास की मुख्य नायिका सारंग भी अपने अस्तित्व के लिए रंजीत को सवाल जवाब करती देखी जा सकती है। सारंग रंजीत के इशारों पर नहीं नाचना चाहती है। वह भी अपने दम पर जीना चाहती है। "तुम दुमुंहा हो गए हो तो मैं तुम्हारा फन कुचल न डालूंगी। यह मत समझना कि दो रोटी के पीछे...।"[91] रंजीत सारंग को स्कूल मास्टर श्रीधर के पास भेजता है कि वह फर्जी स्कूल ग्रांट के फार्म पर हस्ताक्षर कर दें। जब सारंग को इस बात का ज्ञान होता है तो वह रंजीत पर भड़क जाती है। रंजीत पर चिल्लाती है कि मैं तुम्हारी दो रोटी के लिए तुम्हारी कठपुतली बन कर जीवन नहीं जीना चाहती। वह रंजीत के गलत रास्ते का विरोध करती है इसीलिए रंजीत के कुकर्म में शामिल नहीं होना चाहती। इस प्रकार उपन्यास की एक अन्य नारी पात्र कलावती चाची, रामप्यारी, गुलकंदी आदि पाठक वर्ग पर अपनी अमिट छाप छोड़े बगैर नहीं रहती। यथा गुलकंदी द्वारा दहेज़ का विरोध करना था, फिर ग्रामीण परिवेश संबंधित होते हुए भी समाज की परवाह किए बिना अपने मनपसंद साथी को चुनना और समस्त रीति-रिवाजों को अंगूठा दिखाते हुए अपनी जाति के बाहर विवाह करना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कदम है। खेरापतिन चाची जातीय जकड़न को तोड़ नहीं पाती इसीलिए अपना समस्त जीवन लोकगीत के प्रस्तुतीकरण में बिता देती है जो उसके जीवन निर्वाह का माध्यम है। गुलकंदी

की मां रामप्यारी की भूमिका भी सराहनीय है। विधवा नाइन अपनी पुत्री गुलकंदी का विवाह तय करने के लिए स्वयं वर के घर जाती है। इस प्रकार उपन्यास के नारी पात्र पुरानी समाज द्वारा बनाई गई मान्यताओं का विरोध करती हैं तथा अपना जीवन जीने के लिए नई मान्यताएं बनाती हैं। उपन्यास में नारियों का समझौतावादी चरित्र नज़र नहीं आता है।

'अगनपाखी' शीर्षक उपन्यास की मुख्य पात्र भुवन के पति की मृत्यु पर उसे सती होने के लिए कहा जाता है। भुवन आज की नारी होने के नाते ससुराल वालों के इस मत का विरोध करती हैं। सास और जेठानी मिलकर भुवन को अच्छी से अच्छी साड़ी पहनने को देती हैं। जेठानी ने भुवन को हाथों में कंगन पहना दिए। पांव में नए बिच्छूए डाल दिए। भुवन का सोलह श्रृंगार किया गया। भुवन को अपनी अंतिम इच्छा बताने को कहा जाता है। भुवन असमंजस में होती है कि उसे सती क्यों किया जा रहा है? "कौन होती है सती। आज क्या सतयुग धरे? कलयुग में सती।"[92] भुवन सती होने से इंकार कर देती है। वह अपनी सास और जेठानी के इस फैसले का विरोध करती है। वह अपनी अन्तिम इच्छा माता की पूजा करने के बहाने घर से निकलती है। भुवन मंदिर से ही भाग जाती है। भुवन का घर से भाग जाना सती न होने का कारण था। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने नारी से जुड़ी पुरानी मान्यताओं को नकारते हुए दिखाया है। नारी परंपरा से चली आ रही मान्यताओं को ठुकरा देती है। लेखिका ने समाज में नारी की स्थिति में हो रहे सुधार को दिखाया है। नारी अपने साथ हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठा रही है। समाज में नारी, पुरुष अथवा परिवारों की यातनाओं को तमाचा मारती हुई देखी जा सकती है। इस तरह विवेच्य उपन्यास में नारी जागृत होती दिखाई गई है। पुरुष प्रधान समाज होने के बावजूद नारी पुरुष की प्रताड़ना को सहना नहीं चाहती इसीलिए नारी अपने जीवन के फैसले स्वयं करने को मज़बूर होती है।

'त्रियाहठ' शीर्षक उपन्यास में नारी के बदल रहे स्थान का वर्णन किया गया है। उपन्यास में पर्दा करके रहने वाली नारी का वर्णन नहीं मिलता। "पहले ज़माने नहीं रहे कि आदमी औरत को सात पर्दों में छुपा कर रखता था।"[93] उपन्यास में नारी पात्र चुनाव के लिए खड़ी होती हैं। यह नारी पात्र मीरा की मामी होती है।

वह चुनाव के प्रचार के लिए घर-घर घूमती है। सब लोगों को प्रधानी पद उम्मीदवार के रूप में स्वयं का परिचय देती है। गांव में बातें होती है कि अब ज़माना बहुत बदल गया है। प्राचीन समय की नारी नहीं रही। अब नारी विचारधारा बदल गई है। आज की नारी पुरुष से किसी भी दम पर पीछे नहीं रहना चाहती। इस तरह उपन्यास में दिखाया है कि आज की नारी पुरुष के पीछे घुंघट करके चलने वाली नहीं रही है। नारी अपनी स्वतंत्रता के बारे में पूर्णतया परिचित है। लेखिका ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को पाठकों के समक्ष रखा है। उपन्यास में मामी द्वारा चुनाव के लिए खड़े होने पर उसका पति भी भरपूर साथ देता है। वह अपनी पत्नी की प्रगति पथ को स्वयं तय करता है क्योंकि पहले वही प्रधानी पद के लिए खड़ा होता था लेकिन इस बार महिला सीट आने पर उसने अपनी पत्नी को खड़ा किया है। वह लोगों की बातों की परवाह किए बिना पत्नी का भरपूर सहयोग देता है। वर्तमान समय में भी नारी ने समाज में ऐसा स्थान बना लिया है कि वह प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के लिए तैयार है। वह अपने पति से कंधे से कंधा मिलाकर समाज में विचरण कर रही है। आज की नारी अपनी रक्षा के लिए स्वयं 'झांसी की रानी' जैसी भूमिका अदा करती हुई उपन्यास में दिखाई गई है।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में लेखिका ने स्त्री को जहां शोषित होते दिखाया है, वहीं दूसरी ओर नारी का प्रचंड रूप भी देखने को मिलता है। नारी अपने हितों की रक्षा करते हुए देखी जा सकती है। उपन्यास की एक नारी पात्र शारदा अपने न्याय के लिए अपने ही पुत्र की हत्या कर देती है। शारदा की दूसरी शादी होती है क्योंकि उसका पहला पति मर जाता है। शारदा के पास पहले पति का बेटा होता है। यह बेटा संजय अपनी मां के दूसरे पति को स्वीकार नहीं कर पाता। संजय मन ही मन अपने मां का दुश्मन बन जाता है। शारदा के पास बेटी होती है, संजय बेटी को भी अपनी बहन नहीं स्वीकारता है। शारदा ने संजय को बहुत समझाया लेकिन वह नहीं समझा। एक दिन संजय ने अपनी बहन का बलात्कार कर दिया। शारदा ने जब अपनी छोटी सी बच्ची को इस रूप में शारीरिक दर्द से कराहते हुए देखा तो उससे यह सब दृश्य नहीं देखा गया। शारदा संजय से बदला लेने पर उतारू हो जाती है। शारदा भूल जाती है कि संजय उसका बेटा है। एक दिन शारदा ने बदले की आग में जलते हुए संजय के शरीर को चाकू से

लहूलुहान कर दिया। इस प्रकार लेखिका के उपन्यास की नारी घुट कर जीने वाली नहीं बल्कि स्वयं न्याय प्राप्त करने वाली स्त्री है। नारी अपने जीवन से संबंधित मान्यताएं स्वयं चुन लेती है। नारी अपने दोस्तों को भूल कर न्यायसंगत जीवन व्यतीत करने के पक्ष में है ।

इसी तरह 'फ़रिश्ते निकले' शीर्षक उपन्यास की नायिका बेला का चरित्र चित्रण हुआ है। बेला की शादी एक नपुसंक आदमी से हो जाती है। बेला को बाद में पता चला कि शुगर सिंह एक नपुसंक आदमी है। बाद में बेला ऐसे पांच भाइयों के संपर्क में आती है जैसे द्रोपदी। दिन-प्रतिदिन बेला के जीवन में आघत बढ़ने लगे। जब इन पांच भाइयों का बेला से मन भर जाता है तो उन्होंने बेला को अन्य मर्दों के लिए रख दिया। बेला के पास हर रोज़ कोई नया मर्द आता। बेला यह सब सहती रही लेकिन एक दिन इसका उसने अंत कर दिया। बेला ने मौका पाकर पांचों भाइयों को सोते हुए देखकर घर को आग लगा दी। पांचों भाई जलकर राख हो गए। इस तरह उपन्यास की नायिका ने साहसपूर्वक बुराई का अंत किया। अगर बेला कमजोर होती तो वह अपने आपको भी समाप्त कर सकती थी लेकिन उपन्यास की नायिका बेला ने ऐसा न करके बुरे लोगों का ही अंत कर दिया। उसने अपने जीवन में हार नहीं मानी बल्कि अत्याचारों का ही अंत कर दिया। वर्तमान समय में भी नारी का यही रूप देखने को मिलता है। नारी अत्याचारों के साथ जीवन नहीं बिताती बल्कि उन अत्याचारों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करने के पक्ष में है। आज की नारी प्राचीन नारी से काफी जागृति वाली है। नारी जीवन में हार नहीं मानती बल्कि उन समस्याओं का डटकर सामना करती है। आज और प्राचीन काल की नारी में यह अंतर था कि वह पढ़ी-लिखी नहीं थी, उसे अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं था और न ही स्वयं को शोषण मुक्त जीवन जीने की जागृति। उपन्यास में बेला पढ़ी-लिखी होती है इसीलिए वह एक अत्याचारी मुक्त जीवन जीना चाहती है। जिसके कारण बेला ने एक दिन बुराई का अंत कर दिया। अंत में कहा जा सकता है कि लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के विभिन्न सामाजिक पक्ष यथा वैयक्तिक मूल्य, दांपत्यगत मूल्य, पारिवारिक मूल्य, परंपरागत मूल्य आदि के अंतर्गत विविध आयामों की अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में दिखाया है कि समाज में किस प्रकार मूल्य बनते और बिगड़ते हैं? इन्होंने

बदल रहे समाज में मूल्यों के बदलते स्वरूप को प्रस्तुत किया है। साथ ही इक्कीसवीं सदी में समाज का नज़रिया भी नारी के प्रति बदल रहा है। उपन्यास में मामी पात्र चुनाव लड़ती है तथा मामा उनका भरपूर सहयोग देते हैं। उपन्यास में नारी गुलामी को स्वीकार नहीं करती। आधुनिक नारी के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण उसके विचारों और मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। वह समाज में स्वतंत्र जीवन जीने के पक्ष में है। ऐसी ही कुछ नारी पात्र गुनाह बेगुनाह उपन्यास में चित्रित हुई हैं जो कठिन चुनौतियों को भी स्वीकार करने लगी है। नारी के दृष्टिकोण में परिवर्तन के कारण स्थितियों और परिस्थितियों में भी परिवर्तन आया है। ऐसी दशा में मूल्यों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

संदर्भ सूची :-

1.वासुदेव शर्मा, साठोत्तरी हिंदी कहानी में मूल्यों की तलाश, पृ.17
2.डॉ. प्रेम सिंह, साठोत्तरी कहानी और मूल्य, पृ.19
3.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.33
4.वही, पृ.62
5.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.98
6.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.135
7.(सपां) धर्मपाल शास्त्र मैनी, मानव मूल्य, व्याख्या कोश, भाग- 6, पृ.95
8.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.44
9.वही, पृ.391
10.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.40
11.वही, पृ.109
12.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.61
13.वही, पृ.138
14.वही
15.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.22
16. वही, पृ.48
17.वही, पृ.107
18.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.12

19.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.15
20.वही, पृ.179
21.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.59
22.वही
23.वही, पृ.204
24.कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, महके आंगन चहके द्वार, पृ.32
25.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.20
26.मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट, पृ.37
27.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.147
28.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.78
29.वही, पृ.141
30.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.274
31.मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट, पृ.61
32.भीष्म साहनी, कड़ियां, पृ.44
33.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.96
34.वही, पृ.166
35.वही, पृ.224
36.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.88
37.वही, पृ.89
38.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.96
39.वही
40.वही, पृ.110
41.वही, पृ.119
42.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.72
43.वही, पृ.115
44.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.81
45.वही
46.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.83
47.वही, पृ.89

48.वही, पृ.90
49.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.103
50.वही, पृ.205
51.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.34
52.वही, पृ.35
53.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.32
54.वही, पृ.57
55.वही
56.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.106
57.वही, पृ.153
58.वही, पृ.196
59.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.392
60.वही, पृ.159
61.मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट, पृ.13
62.वही, पृ.144
63.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.265
64.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.54
65.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.65
66.वही, पृ.104
67.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.79
68.वही, पृ.207
69.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.98
70.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.26
71.वही, पृ.78
72.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.225
73.मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृ.22
74.वही, पृ.53
75.वही, पृ.92
76.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.19

77.वही, पृ.225
78.मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट, पृ.74
79.मैत्रेयी पुष्पा, अल्माकबूतरी, पृ.379
80.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.21
81.वही, पृ.50
82.मैत्रेयी पुष्पा, विज़न, पृ.80
83.वही, पृ.110
84.मैत्रेयी पुष्पा, कही ईसुरी फाग, पृ.207
85.मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृ.110
86.मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृ.31
87.विनोद रस्तोगी, नए हाथ, पृ.40
88.राहुल भारद्वाज, नवें दशक की हिंदी कहानी में मूल्य विघटन, पृ.114
89.मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ.32
90.मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ.22
91.वही, पृ 290
92.मैत्रेयी पुष्पा, अगनपाखी, पृ.170
93.मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृ.21